04 - मानवीयता की खुली दराज और संवेदना की खुशबू में पगी...

05 - एकांतवास में ही सृजन संभव है: नंद कात्याल

06 - जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय में...

07 - डरना और डराना भी एक तरह का मनोरंजन

A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 04 मई, 2025

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 204, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

राजस्थान के कुम्भलगढ़ किले में स्थित बावन देवरी जैन मंदिर 15 वीं शताब्दी में राणा कुंभा के शासनकाल में बनाया गया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित इस मंदिर में 52 छोटे मंदिर हैं। इसलिए इसे बावन देवरी कहा जाता है। मंदिर की वास्तुकला नागर शैली में है और यह अपनी जटिल नक्काशी और मूर्तियों के लिए जाना जाता है।

फोटो : पंकज शर्मा

सुप्रभात

दीवार-ओ-दर बनाएँगे आकर जो तुम रहो
हम एक घर बनाएँगे आकर जो तुम रहो।

मंज़र बनाएँगे सभी इसमें हसीन-तर
फिर इक नज़र बनाएँगे आकर जो तुम रहो।

मरहम बनाएँगे तुम्हें उल्फ़त में और फिर
ज़ख़्म-ए-जिगर बनाएँगे आकर जो तुम रहो।

दिल को बनाएँगे कभी थोड़ा सा सख़्त तो
आँखों को तर बनाएँगे आकर जो तुम रहो।

जानाँ बनाएँगे जभी तुम को मकीन हम
दिल मुस्तक़र बनाएँगे आकर जो तुम रहो।

– सचिन मेहरोत्रा

पहलगाम अटैक के बाद

भारत ने की समुद्री नाकेबंदी

आईएनएस सूरत तोड़ेगा पाकिस्तान की कमर, हो गई है तैनाती

भारत की तरफ से अब नावों व जहाजों पर भी लगाई गई रोक

अहमदाबाद (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ भारत की कड़ी कार्रवाई जारी है। गुजरात के सूरत में आईएनएस सूरत की तैनाती के बाद अब पाकिस्तान की पोर्ट्स की तरफ मूवमेंट नहीं कर पाएगी। आईएनएस सूरत को हजीरा पोर्ट पर तैनात किया गया है। अरब सागर में अगर पाकिस्तान की बोट भारतीय सीमा में प्रवेश करेंगी तो भारतीय एजेंसियों की तरफ से कार्रवाई की जाएगी। दूसरी तरफ भारत की नावें और जहाज पाकिस्तान की तरफ नहीं जाएंगे। सूत्रों के अनुसार आईएनएस सूरत के हजीरा पोर्ट पहुंचने और पाकिस्तान की नावों और जहाजों पर पाबंदी कराची पोर्ट ठप्प पड़ जाएगा। पाकिस्तान का कराची बंदरगाह सुमद्री व्यापार का बड़ा अड्डा है। भारत ने पहलगाम आतंकी हमले के बाद सबसे पहले सिंधु जल समझौता रद्द किया था। भारत का आईएनएस सूरत 1 मई को गुजरात के हजीरा पोर्ट पर पहुंचा था। भारत के आतंक हमलों के लिए जिम्मेदार पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए तीनों सेनाएं अलर्ट मोड पर आने के बाद भारत ने यह कदम उठाया था। आईएनएस सूरत को कुछ महीने पहले मुंबई में कमीशन किया गया था। भारतीय नौसेना अरब सागर में अपने अभ्यास तेज को तेज किया। इसे युद्ध से पहले की तैयारियों से जोड़कर देखा जा रहा है। नौसेना का जंगी जहाज आईएनएस सूरत को पहली बार सूरत के हजीरा पोर्ट पर तैनात कर दिया गया। अपने नाम वाले शहर पहुंचने पर आईएनएस सूरत का गर्मजोशी से स्वागत किया गया था। नौसेना का आईएनएस-सूरत युद्धपोत विध्वंसक श्रेणी में आता है। यह पनडुब्बी, जहाज, विमान जैसे किसी भी लक्ष्य को निशाना बना सकता है। आईएनएन सूरत में हेलीकॉप्टर भी तैनात हैं। युद्धपोत में आधुनिक हथियार प्रणाली, रडार, और मिसाइलें लगी हैं जो इसे समुद्री सुरक्षा के लिए बेहद प्रभावी बनाती हैं। आईएनएस सूरत में सभी खूबियां मौजूद हैं।

न पाकिस्तान से सेंधा नमक आएगा, न भारत से दवाइयां जाएंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच रिश्तों में और दूरी आ गई है। अब भारत ने पाकिस्तान से आने वाले या पाकिस्तान को जाने वाले सभी सामानों पर तुरंत रोक लगा दी है। यह रोक सीधे तौर पर या किसी और तरीके से आने-जाने वाले सभी सामानों पर लागू होगी। इससे दोनों देशों के बीच व्यापार लगभग बंद हो गया है। दोनों देशों के बीच व्यापार बहुत ज्यादा नहीं है। साल 2019 में हुए पुलवामा हमले के बाद इसमें और कमी आई थी। दोनों देशों ने एक-दूसरे के साथ व्यापार को लेकर कई बैन लगाए लेकिन कुछ आवश्यक वस्तुओं का लेन-देन दोनों देशों के बीच होता रहता है। यह ज्यादातर तीसरे देशों के रास्ते होता है।

आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगा भारत :मोदी

- पीएम बोले-आतंक का समर्थन करने वालों के खिलाफ भी लेंगे ठोस ऐक्शन
- अंगोला ने आतंकवाद के खिलाफ भारत का किया समर्थन, मोदी ने कहा धन्यवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि भारत आतंकवाद और उसका समर्थन करने वालों के खिलाफ दृढ़ और निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ हमारी लड़ाई में अंगोला के समर्थन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने हैदराबाद हाउस में अंगोला के राष्ट्रपति लौरेंको के साथ द्विपक्षीय बैठक के बाद यह बात कही। पीएम मोदी ने कहा कि, हम इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। मैं पहलगाम में आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना जताने के लिए राष्ट्रपति लौरेंको और अंगोला को धन्यवाद देता हूं। इससे पहले, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कहा कि राज्य के सभी पांच करोड़ लोग आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में उनके साथ हैं। शुक्रवार को मुख्यमंत्री ने अमरावती के निर्माण कार्यों की फिर से शुरुआत किये जाने के दौरान यह बात कही। नायडू ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, हम वचन देते हैं कि हम आतंकवाद पर नकेल कसने के लिए प्रधानमंत्री मोदी और केंद्र सरकार के हर कदम के साथ खड़े रहेंगे। नायडू ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा कि आंध्र प्रदेश के पांच करोड़ लोग और पूरा देश उनके साथ हैं। बाद में, नायडू द्वारा लगाये गए 'वंदेमातरम' और 'भारत माता की जय' के नारों से जनसभा गूंज उठी।

सीतामऊ में कृषि उद्योग समागम

कृषि एवं उद्यानिकी में नवाचार और उन्नत तकनीकों से बढ़ाएंगे उत्पादन क्षमता: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहा है। नीति आयोग के अनुसार मध्यप्रदेश, देश में सबसे तेज गति से प्रगति करने वाला राज्य है। आने वाले समय में प्रगति की गति और तेज होने वाली है। राज्य सरकार कृषकों को बिजली में आत्मनिर्भर बनाने जा रही है। अब किसान सौर ऊर्जा से स्वयं बिजली बनाएंगे और पम्प चलाएंगे। उनके द्वारा अपनी आवश्यकता से अधिक बिजली पैदा करने पर राज्य सरकार किसानों से बिजली खरीदेगी और उसका भुगतान भी करेगी। किसानों को मात्र 10 प्रतिशत राशि पर सौर पम्प उपलब्ध कराए जाएंगे। पांच, तीन, दो हार्स पॉवर तक के सौर पम्प के लिए मात्र 10 प्रतिशत राशि जमा कराने पर शेष राशि राज्य सरकार द्वारा किसानों को उपलब्ध कराई जाएगी। इस योजना से किसानों को बिजली के बिल से मुक्ति मिलेगी। तीन साल में 32 लाख सोलर पम्प उपलब्ध कराए जाएंगे। किसान, कृषि पम्प चलाने, घर में बिजली के उपयोग या अन्य प्रयोजनों के लिए अपनी बिजली स्वयं बना सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सीतामऊ (मंदसौर) में कृषि उद्योग समागम ~ 2025 को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंदसौर, नीमच क्षेत्र के किसानों द्वारा ली जा रही विविधतापूर्ण उपजों की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा इसे प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही सीतामऊ में उन्नत कृषि पर केन्द्रित यह आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विदेशी तकनीक से लेकर स्थानीय जुगाड़ तक को प्रोत्साहित करते हुए खेती को फायदेमंद बनाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। हम उन्नत खेती को उद्योग का दर्जा दिलाने के उद्देश्य से कार्य कर रहे हैं, इसीलिए कृषि उत्पादों के उचित मूल्य, लंबे समय तक संधारण और स्थानीय स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण की सुविधा उपलब्ध कराकर किसानों का लाभ सुनिश्चित करने के लिए प्रयास जारी हैं। मध्यप्रदेश में संतरा, केला सहित कई महत्वपूर्ण उत्पाद बड़ी मात्रा में होते हैं। इनकी ब्रांडिंग भी हमारे प्रदेश के नाम पर हो, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी किसानों को उन्नत कृषि अपनाने और बागवानी, फलोद्यान, प्रसंस्करण सहित कृषि से जुड़ी अन्य गतिविधियां अपनाते हुए सम्पन्न बनने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने का संकल्प दिलाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नरवाई जलाने की जानकारी सेटेलाइट के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। गेहूं की फसल के बाद बचे अवशेष में आग लगाने से खेत की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों से नरवाई जलाने से बचने की अपील की। उन्होंने कहा कि इस स्थिति के निराकरण के लिए मशीनें उपलब्ध कराई जा रही है और उन पर अनुदान की व्यवस्था भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ों परियोजना से उज्जैन संभाग के सभी किसानों की जिन्दगी बदलेगी। हर खेत तक सिंचाई के लिये पानी पहुँचेगा।

मानसून सत्र में पेश हो सकता है जातीय जनगणना बिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में जनगणना, जातियों की गिनती, परिसीमन और संसद में महिला आरक्षण की कवायद एक साथ शुरू होगी, क्योंकि इनकी टाइमलाइन एक साथ आ गई हैं। जनगणना और जातीय गणना 2026 से शुरू होगी। क्योंकि 2001 में लोकसभा सीटों की संख्या 2026 तक फ्रीज की गई थी। परिसीमन की कवायद भी 2026 से होगी। क्योंकि 2021 में जनगणना समय पर होती तो परिसीमन 2031 की जनगणना के आधार पर होता। प्रशासनिक सीमाएं बदलने की छूट 31 दिसंबर 25 तक बढ़ेगी, यह पहले 1 जून 2025 थी। वहीं, महिला आरक्षण का अधिनियम 20 सितंबर 2023 में पारित हुआ था। इसमें यह व्यवस्था की गई कि इस अधिनियम के पारित होने के बाद आगामी परिसीमन और जनगणना के आंकड़ों के आधार पर महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में सीटें आरक्षित होंगी। जनगणना प्रश्नावली, सॉफ्टवेयर और तकनीकी उपकरण तैयार करने में 1-2 साल लगते हैं। इसके बाद फील्ड वर्क शुरू होता है, जो 2-3 महीने चलता है। फिर डेटा सत्यापन और प्रकाशन में 1-2 साल लगते हैं यानी 3-4 साल लगते रहे हैं। परिसीमन आयोग गठन में 1-2 महीने लगते हैं। डेटा संग्रह व विश्लेषण में 6-12 महीने खर्च होते हैं। सार्वजनिक परामर्श में 6-12 महीने लगते हैं। 3-6 माह में अंतिम रिपोर्ट बनती है। लागू होने में 6-12 माह लगते हैं। यानी 2-3 साल लगते हैं। यह समयावधि अनुमानित है। कम-ज्यादा भी हो सकती है। एक अनुमान के अनुसार, जनगणना के लिए करीब 14 हजार करोड़ रु. का आवंटन किया जा सकता है। यानी प्रति भारतीय औसतन 100 रु. का खर्च आएगा। इसमें जातीय जनगणना के अलावा नेशनल पापुलेशन रजिस्टर अपडेट करने की कवायद भी शामिल है। बता दें कि केंद्र सरकार ने 2019 में 8,754 करोड़ रु. मंजूर किए थे और 3,941 करोड़ रु. नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर अपडेट करने के लिए रखे गए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 04 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सिर्फ 3 मंजिल नहीं, पूरी संजौली मस्जिद गिरेगी

● कोर्ट ने घोषित किया अवैध,दिया कार्रवाई का आदेश

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला के संजौली क्षेत्र में स्थित मस्जिद को लेकर नगर निगम अदालत ने अंतिम निर्णय सुना दिया है। पूरी मस्जिद के अवैध घोषित कर उसे पूरी तरह गिराने का आदेश दिया गया है। इससे पहले अदालत ने 5 अक्टूबर 2024 को मस्जिद की ऊपरी तीन मंजिलों को गिराने का आदेश दिया था। शिमला नगर निगम आयुक्त भूपिंदर अत्री की अदालत ने शनिवार को सुनवाई के बाद पूरे निर्माण को अवैध करार देते हुए संजौली मस्जिद को पूरी तरह से गिराने का आदेश जारी कर दिया। यह फैसला उस समय आया जब वक्फ बोर्ड की ओर से अदालत में मस्जिद की जमीन का मालिकाना हक साबित करने के लिए कोई पुख्ता दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए जा सका। साथ ही मस्जिद निर्माण से संबंधित कोई वैध नक्शा या नगर निगम की

स्वीकृति भी पेश नहीं की गई। इससे पहले अदालत ने 5 अक्टूबर 2024 को मस्जिद की ऊपरी तीन मंजिलों को गिराने का आदेश दिया था, लेकिन मस्जिद कमेटी इस पर समय रहते कार्रवाई नहीं कर सकी। शनिवार को हुई सुनवाई में नगर निगम अदालत ने मस्जिद के बची हुई दो मंजिलों को भी अवैध माना और उन्हें गिराने का आदेश दिया। सुनवाई के दौरान वक्फ बोर्ड के वकील ने दलील दी कि मस्जिद का अस्तित्व 1947 से पहले का है और यह पुनर्निर्माण है। इस पर अदालत ने सवाल उठाया कि अगर यह पहले से मौजूद थी तो नए निर्माण के लिए नगर निगम की मंजूरी क्यों नहीं ली गई। नियमों को ताक पर रखकर सारी मस्जिद बनाई गई। पौने घंटे तक चली बहस के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा और दोपहर एक बजे के बाद नगर निगम आयुक्त भूपिंदर अत्री ने फैसला सुनाया। इसमें साफ कहा कि पूरी मस्जिद अवैध है, इसे गिराया जाए।

● **मस्जिद कमेटी समय पर नहीं कर सकी कार्रवाई-** 5 अक्टूबर 2024 को नगर निगम अदालत ने मस्जिद की ऊपरी तीन मंजिलों को गिराने का आदेश दिया था, जिसे दो महीने के भीतर पूरा करना था। लेकिन मस्जिद कमेटी द्वारा समय-सीमा में कार्य पूरा नहीं किया जा सका। बाद में दो बार और समय मांगा गया, परंतु अब भी एक मंजिल और पिलर का काम अधूरा है। संजौली मस्जिद का यह मामला तब सुर्खियों में आया जब 29 अगस्त 2024 को शिमला के मल्याणा क्षेत्र में दो समुदायों के बीच झड़प हुई, जिसमें एक व्यक्ति घायल हुआ था। इसके बाद 1 सितंबर को संजौली मस्जिद के बाहर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई और अवैध निर्माण का मुद्दा उठ खड़ा हुआ। 11 सितंबर 2024 को हिंदू संगठनों ने मस्जिद निर्माण के विरोध में प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड तोड़कर मस्जिद की ओर कूच किया, जिस पर पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। इस दौरान कई प्रदर्शनकारी और पुलिस कर्मी घायल हुए। इसी के बाद नगर निगम कोर्ट ने इस मामले में गंभीरता दिखाई और जांच शुरू की।

हिसार में शाह की सुरक्षा में चूक, गृह मंत्रालय सख्त

हिसार (एजेंसी)। हिसार में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सुरक्षा चूक को लेकर हरियाणा सरकार ने हाई लेवल जांच कमेटी बना दी है। इस कमेटी की अगुआई रिटायर्ड जस्टिस एचएस भल्ला करेंगे। इसके अलावा प्रदेश के अतिरिक्त मुख्य सचिव विजयेंद्र

कुमार और डीआईजी कानून व्यवस्था संजय कुमार को सदस्य बनाया गया है। यह जांच कमेटी 31 मार्च को हिसार के अग्रोहा में शाह की सुरक्षा चूक की जांच कर जिम्मेदारी तय करेगी। ऐसी सूरत में पुलिस के बड़े अफसरों पर गाज गिर सकती है। इससे पहले हरियाणा पुलिस एक एसीपी और एक इंस्पेक्टर को नोटिस देकर जवाबतलबी कर चुकी है।

कर्नाटक में बजरंग दल नेता की हत्या के बाद तनाव

मंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मंगलुरु में बजरंग दल का नेता और 2022 के फाजिल हत्याकांड के मुख्य आरोपी सुहास शेट्टी की बुधवार रात करीब 8.30 बजे हत्या कर दी गई। इसके बाद से इलाके में तनाव की स्थिति बनी हुई है। प्रशासन ने 2 मई से लेकर 6 मई

सुहास शेट्टी - मृतक

तक पूरे शहर में कर्फ्यू लागू कर दिया है। राज्य के गृह मंत्री डॉ. जी परमेश्वर ने बताया कि मामले की जांच जल्द ही एंटी कम्युनल टास्क फोर्स करेगी। पुलिस भड़काऊ बयान देने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। कोई कितना भी शक्तिशाली व्यक्ति क्यों न हो, पुलिस ऐक्शन लेगी। चाहे वे राजनीतिक नेता ही क्यों न हो। पुलिस ने अब तक 8 लोगों को हिरासत में लिया है।

खौफ में हर हथियार चलाकर देख रहा पाकिस्तान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत के आक्रामक रुख को देखते हुए पाकिस्तान बुरी तरह घबरा गया है। खाड़ी देशों के सामने मिन्नतें करने के बाद अब वह हथियारों पर हाथ-पांव मारने लगा है। वह एक-एक कर अपने हथियारों को चलाकर

देख रहा है। शनिवार को पाकिस्तान की सेना ने आनन-फानन में अब्दाली मिसाइल का टेस्ट कर डाला। भारत के सख्त रुख को देखते हुए पाकिस्तान गीदड़भभकी वाला माहौल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। पाकिस्तान की सेना ने बयान जारी कर बताया कि शनिवार को सरफेस टु सरफेस मिसाइल अब्दाली वेपन सिस्टम का परीक्षण किया गया है। इसकी रेंज 450 किलोमीटर की है।

किसान को जबड़े में दबाकर ले गया बाघ

बालाघाट में ग्रामीणों के शोर मचाने पर भी नहीं छोड़ा; खेत में काम कर रहे थे

बालाघाट (नप्र)। शनिवार सुबह बालाघाट में कटंगी रेंज के कुडवा कॉलोनी के पास खेत में काम कर रहे किसान पर बाघ ने हमला कर दिया। किसान की मौके पर ही मौत हो गई। बाघ शरीर का निचला हिस्सा खा गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हम लोग रोज की तरह सुबह पांच बजे खेत में काम करने पहुंच गए थे। करीब 6 बजे बाघ ने पीछे से प्रकाश पाने (45) पर हमला कर दिया। हम लोग चिल्लाते हुए वहां से भागे। थोड़ी दूर जाकर हमने पत्थर फेंककर बाघ को भगाने की कोशिश भी की। तब तक बाघ उसे अपना शिकार बना चुका था।

हम लोगों ने देखा कि बाघ प्रकाश को जबड़े में दबाकर घसीटते हुए खेत में ले गया और बैठ गया। इस बीच वो दो बार दहाड़ा भी। घटना के बाद वन विभाग के प्रति ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने वन चौकी का घेराव कर दिया।

ग्रामीण बोले- वन विभाग को आगाह किया था- ग्रामीणों का कहना है कि हम लोग एक हफ्ते पहले से वन विभाग के अफसरों को बता रहे थे कि हमारे खेतों में बाघ घूम रहा है। इसके बाद भी कोई एक्शन नहीं लिया गया। वन विभाग की लापरवाही की वजह से हमारे साथी की मौत हो गई। बाघ के हमले से पहले भी मौतें हो चुकी हैं।

वन चौकी पहुंची पुलिस, समझाइश दी- कटंगी थाना प्रभारी कौशल सूर्या ने बताया कि ग्रामीणों को समझाइश दी जा रही है। मृतक का शव बरामद कर लिया है। घटनास्थल पर पुलिस बल के साथ ही एसडीएम, वन विभाग के अधिकारी मौजूद हैं। रेंजर बाबूलाल ने बताया कि तिरोड़ी थाना क्षेत्र के ग्राम कुड़वा निवासी प्रकाश पाने के शरीर पर कई जगह गहरे निशान हैं। जांघ के पास का हिस्सा बाघ खा गया है।

शिवपुरी में कार ने बाइक को टक्कर मारी

दो बहनों समेत एक ही परिवार के 4 की मौत, हादसे के बाद भागा कार ड्राइवर

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी में एक तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी। इस हादसे में दो मासूम बच्चियों समेत 4 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा शनिवार दोपहर में जिले के रन्नौद थाना क्षेत्र के माढ़ा गणेशखेड़ा गांव के पास हुआ।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, हादसा इतना भयावह था कि टक्कर लगते ही चारों लोग सड़क पर गिर पड़े और घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। मृतकों में दो बच्चियों के अलावा एक बुजुर्ग और एक युवक शामिल है। चारों एक ही बाइक पर सवार होकर जा रहे थे। इसी दौरान सामने

से आ रही तेज रफ्तार इको कार ने टक्कर मार दी। घटना की जानकारी मिलते ही रन्नौद थाना प्रभारी अरविंद चौहान पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और मृतकों के शवों को तुरंत हटवाकर बदरवास के अस्पताल भिजवाया। हादसे में किशनलाल आदिवासी (57), बंटी पिता किशनलाल आदिवासी (27), पूनम पिता सियानंद आदिवासी(4) और सलोनी पिता सियानंद आदिवासी (3) की मौके पर ही मौत हो गई। ये सभी खोराना गांव के रहने वाले थे। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। कार चालक की तलाश की जा रही है।

महिला प्रिंसिपल ने लाइब्रेरियन को पीटा...

थप्पड़ मारा, मोबाइल फेंका, बाल पकड़कर खींचा ; वीडियो वायरल

खरगोन (नप्र)। जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर मेनगांव स्थित शासकीय एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय में महिला प्रिंसिपल व लाइब्रेरियन में मारपीट। इंटरनेट पर वीडियो बहुप्रसारित हुआ। इसके बाद कलेक्टर भव्या मित्तल के आदेश पर सहायक आयुक्त आदिवासी विकास विभाग प्रशांत आर्या ने प्राचार्य और लाइब्रेरियन को तत्काल हटाया। मामला शुक्रवार का है। प्रभारी मंत्री विश्वास सारंग के दौरे का कारण इसे दबा दिया गया।

महिला प्रिंसिपल ने जड़ा लाइब्रेरियन को थप्पड़- खरगोन जिला मुख्यालय से महज आठ किमी दूर स्कूल के महिला प्रिंसिपल प्रवीण दाहिया और शिक्षिका (लाइब्रेरियन) मधुरानी ने शिक्षा के मंदिर की मर्यादा को तार-तार किया।

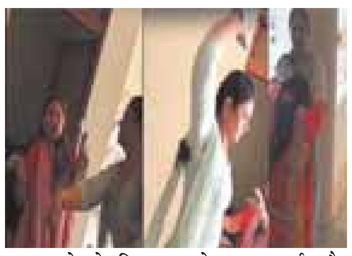

एक-दूसरे से विवाद करते हुए प्राचार्य और लाइब्रेरियन मोबाइल पर वीडियो बनाते रहे। विवाद अधिक होने पर प्राचार्य दाहिया ने लाइब्रेरियन को एक थप्पड़ मार दिया। उनका मोबाइल छीनकर तोड़ दिया।

महिला प्रिंसिपल और लाइब्रेरियन दोनो भीड़ गई। एक दूसरे की चोटी पकड़कर मारपीट शुरू हो गई। प्राचार्य ने एक नहीं लाइब्रेरियन को कई थप्पड़ मारे। चोटी पकड़कर दीवार से पटका। कुछ टीचर छुड़वाने की बात करते रहे, लेकिन दोनों के बीच-बचाव के लिए कोई भी नहीं आया।

इस मारपीट का वीडियो वहां खड़े किसी अन्य व्यक्ति ने अपने मोबाइल में कैद कर लिया। स्कूल प्राचार्य और लाइब्रेरियन दोनों ही अलग-अलग समय पर मेनगांव थाने पहुंची। दोनों ने एक-दूसरे पर आरोप लगाते हुए आवेदन भी दिया है। मेडिकल के लिए दोनों को जिला अस्पताल भेजा गया। यहां प्राचार्य दाहिया आइसीयू में भर्ती हो गई और लाइब्रेरियन मधुरानी भी वार्ड में भर्ती हुई है।

कलेक्टर ने दिए जांच के आदेश

उल्लेखनीय है कि एकलव्य आदर्श आवासीय परिसर दिल्ली से संचालित होता है। यहां करीब सालाना 5 करोड़ से अधिक की राशि बच्चों के पढ़ाई और आवासीय व्यवस्था के लिए पहुंचाई जाती है। फिलहाल कलेक्टर के आदेश पर मामले की जांच कर रिपोर्ट दिल्ली भेजी जा रही है, जिससे प्राचार्य और लाइब्रेरियन के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा सके।

संभल के 'सिंघम' को योगी सरकार ने दिया बड़ा झटका

सीओ अनुज चौधरी का ट्रांसफर, विवादित बयान बने वजह

संभल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल में पुलिस महकमे में हुए ट्रांसफर की खबर एक बार से सुर्खियों में आ गई। संभल के सिंघम के नाम से मशहूर सीओ अनुज चौधरी का तबादला हो गया है। बीते करीब पांच-छह महीने से अनुज लगातार चर्चा में रहे। संभल में जामा मस्जिद सर्वे के दौरान भड़की हिंसा से लेकर इस बार की होली तक उनकी बातें और ऐक्शन लगातार छाया रहा। हालांकि उनके बयानों को लेकर प्रशासनिक जांच भी चल रही है। अब वह चंदौसी सीओ की जिम्मेदारी संभालेंगे। एक नजर डालते हैं

उनके चर्चित बयानों पर, जो विवाद के केंद्र में आए। गौरतलब है कि सीओ अनुज चौधरी ने हिंसा के बाद एक निजी चैनल के पत्रकार से बातचीत करते हुए बयान दिया कि हम लोग मरने के लिए पुलिस में भर्ती नहीं हुए हैं। हमारे भी बीबी बच्चे हैं। कोई हमला करेगा और हम आत्मरक्षा में अपना बचाव भी नहीं करेंगे। विवादित ढांचे के सर्वे को लेकर हिंसा और बवाल हुआ था, तब कई पुलिसकर्मियों को गोली लगी थी। इसमें संभल सीओ अनुज चौधरी भी शामिल थे।

'दीघा' मंदिर को लेकर ओडिसा-बंगाल सरकार में ठनी

● नवकलेवर अनुष्ठान की लकड़ी दीघा मंदिर को देने का है आरोप

भुवनेश्वर (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल सरकार के दीघा मंदिर विवाद के बीच ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने शुक्रवार को श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन से मामले की जांच करने को कहा। मीडिया रिपोर्ट्स में सामने आया था कि पुरी जगन्नाथ मंदिर के सेवक दीघा मंदिर के समारोह में शामिल हुए थे। उन्होंने मूर्तियां बनाने के लिए मंदिर को 2015 के नवकलेवर से बची नीम की लकड़ी दी। नवकलेवर हर 12 या 19 साल में होने वाला अनुष्ठान है। इसमें पुरी के मंदिर में भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और भगवान जगन्नाथ की लकड़ी की मूर्तियां बदली जाती हैं। इसके अलावा पुजारियों, भक्तों, विद्वानों और पंडितों ने दीघा मंदिर को पश्चिम बंगाल सरकार के 'जगन्नाथ धाम' कहे जाने पर भी आपत्ति जताई है।

गोवा के शिरगांव में हादसा भगदड़ में सात की मौत

● 50 से ज्यादा घायल, बिजली तार गिरने से हादसा

एक-दूसरे पर गिरे लोग, 20 लोगों की हालत गंभीर

पणजी (एजेंसी)। गोवा के शिरगांव में श्री लैराई जात्रा (यात्रा) के दौरान शुक्रवार रात मची भगदड़ में 7 लोगों की मौत हो गई। जानकारी शनिवार सुबह आई है। हादसे में 50 से ज्यादा लोग घायल हैं, जिनमें 20 गंभीर हैं। राहत-बचाव कार्य जारी है। मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। शुक्रवार शाम को बड़ी संख्या में श्रद्धालु जात्रा में शामिल होने मंदिर की ओर जा रहे थे। इसी दौरान एक दुकान के सामने बिजली के तार से करंट लगने के बाद कुछ लोग गिर गए। तभी अफरा-तफरी हुई और भगदड़ मच गई। क्राउड मैनेजमेंट के पर्याप्त इंतजाम नहीं होने की वजह से हादसा हुआ। मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं। श्री लैराई जात्रा नॉर्थ गोवा के बिचोलिम तालुका के शिरगांव गांव में आयोजित होने वाला हिंदू धार्मिक उत्सव है। जात्रा हर साल अप्रैल या मई में होती है। इसमें गोवा, महाराष्ट्र, और कर्नाटक से हजारों श्रद्धालु आते हैं। जात्रा 2 मई की शाम से 3 मई की सुबह तक आयोजित की गई थी। इसी दौरान हादसा हुआ।

पुलिस के मुताबिक- महाराष्ट्र, कर्नाटक सहित कई राज्यों के 30 से 40 हजार लोग यात्रा में शामिल होने पहुंचे थे। शुक्रवार शाम भीड़ मंदिर की ओर जा रही थी, तभी एक ढलान पर कुछ लोग गिर पड़े।

मणिपुर हिंसा के दो साल, राज्य में हाई अलर्ट

● मैतेई-कुकी संगठनों ने अपने-अपने क्षेत्रों में बंद बुलाया ● 3 जिलों में कड़ी है सुरक्षा,10 हजार और जवान तैनात

इम्फाल (एजेंसी)। मणिपुर हिंसा को 3 मई को दो साल हो गए हैं। इस दौरान 250 से ज्यादा मौतें हुई। 50 हजार लोग आज भी विस्थापित हैं। जो 6 हजार एफआईआर दर्ज हुई, उनमें करीब 2500 में कार्रवाई आगे नहीं बढ़ी। जो गंभीर अपराध हैं, उन पर सीबीआई या राज्य शासन कोई अपडेट नहीं दे रहा है। शनिवार को मैतेई संगठन कोऑर्डिनेटिं कमेटी ऑन मणिपुर इंटीग्रिटी ने लोगों ने सभी गतिविधियां बंद रखने और अपने कन्वेंशन में शामिल होने के लिए कहा था। वहीं, कुकी स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन और जोमी स्टूडेंट्स फेडरेशन ने भी कुकी आबादी वाले इलाकों में बंद बुलाया। मणिपुर में लगभग सभी जगह आज बाजार,

दुकानें और स्कूल-कॉलेज बंद रहे और सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहा। कुकी समुदाय ने आज के दिन को डे ऑफ आइसोलेशन के रूप में मनाया। इधर, राज्य में तनाव को देखते हुए सुरक्षाबलों ने इम्फाल, चुराचांदपुर और कंगपोकपी में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की। मणिपुर हिंसा की दूसरी बरसी से एक दिन पहले (2 मई) सुरक्षाबलों ने फ्लैग मार्च किया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 34 बटालियन के डीजीपी सुशांकर उपाध्याय ने बताया कि इस फ्लैग मार्च से लोगों में एक भरोसा पैदा होगा। लोगों को लगेगा कि हालात पर काबू पाने के लिए यहां एक न्यूट्रल (किसी के पक्ष में नहीं) फोर्स है।

13 फरवरी से राष्ट्रपति शासन, नई सरकार की मांग भी हो गई है तेज

मणिपुर में 13 फरवरी से राष्ट्रपति शासन है, लेकिन मौजूदा विधानसभा भंग नहीं हुई है। सिर्फ निलंबित है। इसलिए कई नागरिक संगठन इसके विरोध में उतर आए हैं। सियासी ताकत पूर्व सीएम एन. वीरेन सिंह के हाथ में है, क्योंकि यहां भाजपा बिखरी हुई है। चार-पांच दिन पहले ही 21 विधायकों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र भेजकर राज्य में तत्काल लोकप्रिय सरकार बनाने की मांग की थी। पत्र पर भाजपा के 14 विधायकों ने साइन किए हैं। मणिपुर हिंसा के दो साल बाद हालात ये हैं कि स्कूल, अस्पताल, सरकारी दफ्तर और बाजार सामान्य स्थिति की ओर लौट गए हैं। मैतेई बहुल इलाकों से बाजार का सामान कुकी वाले इलाकों में जा रहा है। मगर राज्य दो हिस्सों में बंट गया है। एक तरफ मैतेई हैं और दूसरी ओर कुकी। इनमें भी कुकी वाले इलाके ज्यादा संवेदनशील हैं।

इंदौर में धर्म पूछकर व्यापार करने के लिए लगे पोस्टर

लिखा-धर्म पूछकर गोली मारी जा सकती है तो वैसे ही व्यापार करना पड़ेगा

इंदौर (एजेंसी)। पहलगाम में हुए आतंकी हमले का गुस्सा इंदौर में अभी तक कम नहीं हुआ है। यहां अब धर्म पूछकर व्यापार करने के पोस्टर लगाए गए हैं। पोस्टर पर बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद लिखा है। विश्व हिंदू परिषद के राजेश बिंजवे खुलकर सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि जब धर्म पूछकर हत्या की गई, तो हमें भी अधिकार है कि हम नाम पूछकर व्यापार-व्यवहार करें। ये पोस्टर सेंट्रल जेल के सामने लगाए गए हैं, जो सोशल मीडिया पर वायरल किए जा रहे हैं। पोस्टर में लिखा है कि अगर धर्म पूछकर गोली मारी जा सकती है तो धर्म पूछकर ही व्यापार करना पड़ेगा। अपने बच्चों के सुरक्षित भविष्य के लिए अब तो नाम पूछना ही पड़ेगा। आदत डालिए नाम पूछने की। पोस्टर में जम्मू-कश्मीर का नक्शा भी है, जिसमें पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए लेफ्टिनेंट विनय नरवाल का शव और उसके पास बैठीं उनकी पत्नी हिमांशी दिखाई दे रही हैं। भले ही इस तरह के कुछ ही पोस्टर लगे हों, लेकिन इनकी तस्वीरें लोग सोशल मीडिया पर जमकर शेयर कर लोगों से इस अभियान में शामिल होने को कह रहे हैं। बिंजवे ने कहा कि धर्म पूछकर मारा

जा रहा है, तो तुम्हें हिंदुस्तान में रहने का अधिकार नहीं है। हमसे कमाएंगे और हम ही पर गोलियां चलाएंगे ये तो ठीक नहीं है। हिंदू समाज से आव्हान किया है कि जब भी किसी से व्यापार-व्यवहार करो तो सबसे पहले नाम पूछो। नाम नहीं बताते हैं, जय श्रीराम नहीं कहते हैं तो हमें उनसे व्यापार-व्यवहार नहीं करना है। जब पेट पर लात लगेगी, तब समझ में आएगा कि हम यहां आतंकवाद नहीं फैला सकते हैं। हिंदुस्तान में रहना है तो वंदे मातरम् कहना पड़ेगा।

पाकिस्तानी नागरिकों को नो एंट्री

पहलगाम आतंकी हमले को लेकर इंदौर के कई इलाकों में इससे पहले भी विरोध-प्रदर्शन और पोस्टरबाजी देखी जा चुकी है। बीते हफ्ते शहर के छप्पन दुकान इलाके में एक पोस्टर लगाया गया था, जिसमें लिखा था सुअरों और पाकिस्तानी नागरिकों को नो एंट्री (पिग्स एंड पाकिस्तानी सिटीजन्स आर नॉट अलाउड)। इस पोस्टर में एक सुअर को पाकिस्तानी सेना के जनरल के रूप में दिखाया गया था। इंदौर में दो दिन पहले ही इसी आतंकी हमले के विरोध में पाकिस्तान का पुतला जलाते वक्त भीड़ में किसी शख्स द्वारा पाकिस्तान जिंदाबाद का नारे लगाने को लेकर भी विवाद हो गया था, जिसके बाद इंदौर के विधायक ने देर रात ही सदर बाजार थाने में शिकायत करते हुए नारे लगाने वाले लोगों पर कार्रवाई करने की मांग की थी। इसके बाद नारे लगवाने वाले पार्षद अनवर कादरी को पुलिस ने गिरफ्तार भी किया था। इसके अलावा इंदौर के पेंटर संगठन द्वारा भी शहर की सड़कों पर पाकिस्तानी झंडे के साथ पाकिस्तान मुर्दाबाद लिखकर विरोध प्रदर्शन किया गया था।

4 महीने में वापस मिले 2 करोड़ 73 लाख रुपए

सही समय पर की थी शिकायत, लोगों को कर रहे अवेयर : एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच

इंदौर (एजेंसी)। साइबर ठगी के मामलों में इंदौर क्राइम ब्रांच ने पिछले चार महीने में 2 करोड़ 73 लाख रुपए आवेदकों को वापस कराए। ठगी के शिकार हुए लोगों ने इसकी शिकायत की थी। शिकायत के बाद क्राइम ब्रांच की टीम ने त्वरित कार्रवाई की। जिससे लोगों को उनका पैसा वापस मिल सका। इसके पहले भी क्राइम ब्रांच लोगों के करोड़ों रुपए वापस करा चुकी है। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच राजेश दंडोतिया ने बताया कि जनवरी से अप्रैल तक मिली ऑनलाइन फ्रॉड की शिकायतों में 2 करोड़ 73 लाख से ज्यादा की राशि आवेदकों को रिफंड कराई गई है। ऑनलाइन ठगी की शिकायतों में क्राइम ब्रांच इंदौर की फ्रॉड इन्वेस्टिगेशन टीमों को लगाया गया है। क्राइम ब्रांच इंदौर पुलिस द्वारा संचालित साइबर हेल्पलाइन, एनसीआरपी पोर्टल आदि के माध्यम से मिली

ऑनलाइन फ्रॉड की शिकायतों पर क्राइम ब्रांच की फ्रॉड इन्वेस्टिगेशन सेल ने आवेदकों से फ्रॉड की पूरी जानकारी लेकर उस पर एक्शन लिया और आवेदकों से ठगे पैसे उन्हें वापस कराए।

ये है पिछले सालों का आकड़ा

बीते सालों की बात करें तो क्राइम ब्रांच ने ऑनलाइन फ्रॉड की शिकायतों में साल 2021 में 1 करोड़ 37 लाख रुपए आवेदकों को वापस कराए। पुलिस कमिश्नर सिस्टम लागू होने के बाद साल 2022 में 3 करोड़ 92 लाख रुपए रिफंड कराए। 2023 में 5 करोड़ रिफंड कराए गए, जबकि 2024 में ये आंकड़ा 14 करोड़ 17 लाख रुपए तक पहुंच गया। ये सभी राशि पीड़ित आवेदकों के खातों में वापस कराई गई हैं।

4 महीने में ही 2 करोड़ 73 लाख पहुंची राशि

जनवरी से अप्रैल की बात करें तो ऑनलाइन फ्रॉड की शिकायतों में 2 करोड़ 73 लाख से ज्यादा की राशि पीड़ितों को रिफंड कराई गई है। देखा जाए तो शहर में लगातार साइबर फ्रॉड के मामलों में भी बढ़ोतरी आ रही है, जिसकी शिकायतें पीड़ित कर रहे हैं। हालांकि क्राइम ब्रांच लोगों को ऑनलाइन फ्रॉड से बचाने के लिए साइबर पाठशाला जैसे अभियान के माध्यम से लोगों को जागरूक कर रही है। इधर, एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने बताया कि अगर कोई भी ऑनलाइन धोखाधड़ी का शिकार होता है तो वे तुरंत क्राइम ब्रांच इंदौर द्वारा संचालित साइबर हेल्पलाइन नंबर 7049124445 या 1930/एनसीआरपी पोर्टल पर शिकायत करें।

गर्मी का मिजाज अभी तीखा रहेगा

आज भी तापमान रहेगा ज्यादा, दिनभर सताएगी गर्मी, रात के तापमान में हल्की गिरावट

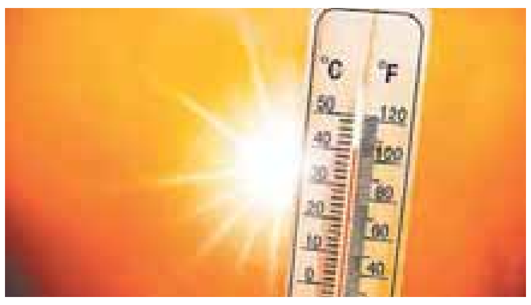

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में मई के तीसरे दिन भी खासी तपिश रही। पहले दिन पारा 42 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया था। दूसरे दिन तापमान में हल्की गिरावट आई थी, लेकिन काफी गर्मी थी। इस दौरान तापमान 41.4 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। रात के तापमान में 1 डिग्री की गिरावट आई और 25.4 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। शनिवार सुबह से मौसम साफ था और गर्मी का तेज असर शुरू हो गया था। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अभी एक-दो दिन मौसम ऐसा ही रहेगा। इस दौरान गर्मी सताएगी। अभी दिन का तापमान सामान्य से 1 डिग्री और रात का तापमान 2 डिग्री ज्यादा बना हुआ है। इन दिनों मौसम ऐसा है कि सुबह 11 बजे से तेज धूप शुरू हो जाती है। इसका असर शाम 4 बजे तक ज्यादा रहता है। इस दौरान गर्म हवाओं के थपेड़ों से लोग हलाकान हो रहे हैं। इस कारण सड़कों पर आवाजाही सामान्य दिनों से कुछ कम है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक साइक्लोनिक सर्कुलेशन सकुर्लेशन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस के एक्टिव होने से मध्य प्रदेश में ओले-बारिश का दौर जारी है। अगले कुछ दिन तक ऐसा ही मौसम बना रहेगा। इंदौर और आसपास इसका असर नहीं है।

विजय नगर इलाके में दो युवकों से मारपीट

बाइक सवार तीन युवक ने रोका, कहा- बाइक की किश्त क्यों नहीं भरी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के स्वर्ण बाग कॉलोनी में रहने वाले एक युवक ने विजय नगर थाने में तीन अज्ञात लोगों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। तीनों युवकों ने फरियादी को रोक कर उसके साथ बाइक की किश्त को लेकर विवाद किया और मारपीट की। विजय नगर पुलिस के मुताबिक घटना भमौरी प्लाजा की है। स्वर्ण बाग कॉलोनी में रहने वाले मनीष पिता मुकेश काले ने तीन अज्ञात बाइक सवार लोगों के खिलाफ केस दर्ज कराया है। मनीष ने पुलिस को बताया कि वह उसके दोस्त अजय मालवीय के साथ निजी काम से पाटनीपुरा जा रहा था तभी भमौरी प्लाजा के सामने बाइक सवार तीन अज्ञात लोग आए और बाइक लगाकर रोक दिया और बोलने लगे की बाइक की किश्त क्यों नहीं भरी। मनीष ने उन्हें कहा कि उसने सारी किश्तें भर दी है इस बात को लेकर उनका विवाद हो गया और तीनों युवकों ने मनीष और अजय के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी। मना करने पर तीनों ने लात-घूसों से मारपीट की। जिससे मनीष की आंख और सिर में चोट लगी। अजय बीचबचाव करने आया उसके साथ भी हाथापाई की और वहां से जाने के दौरान उन्होंने जान से मारने की धमकी भी दी। इधर, पुलिस ने मनीष की शिकायत पर केस दर्ज कर तीनों की तलाश शुरू कर दी है।

ऑपरेटर्स ने दिए सुझाव : आईएसबीटी तक लोक परिवहन की व्यवस्था की जाए

इंदौर (एजेंसी)। कुमेड़ी इंटर स्टेट बस टर्मिनल (आईएसबीटी) कैसे संचालित किया जाए, इसके लिए लोकल बस ऑपरेटर के साथ इंदौर विकास प्राधिकरण, आरटीओ और प्रशासन के अफसरों ने बैठक की। सबसे अहम मुद्दा निकलकर आया कि कुमेड़ी तक पहुंचने के लिए बहुत सस्ता लोक परिवहन का साधन प्राथमिकता होनी चाहिए। राजेंद्र नगर, राऊ, भंवरकुआं, तिलक नगर, नौलखा, पालदा तरफ से लोग यहां आएंगे तो कार, ऑटो, टैक्सी से किराया यहां तक आने का 500 रुपए से अधिक हो जाएगा। बस से जहां जाना है, वहां का किराया भी लोकल में आने-जाने से अधिक हो जाएगा। सीईओ रामप्रकाश अहिरवार, आरटीओ प्रदीप शर्मा सहित अन्य अफसर बैठक में शामिल थे। ऑपरेटर ने कहा कि नौलखा, सरवटे, लाबरिया भेरू स्थित बस स्टैंड तक पहुंचना बहुत सुलभ है। शहर में कहीं से भी कुमेड़ी तक जाने में 30 मिनट से अधिक समय लगेगा।

कांग्रेस का मटका फोड़ प्रदर्शन, वार्डों में चलेगा अभियान

नलों में आ रहे गंदे पानी को लेकर महापौर और परिषद के खिलाफ लगाए नारे

इंदौर (एजेंसी)। जलसंकट को लेकर शहर कांग्रेस कमेटी ने शनिवार को कलेक्ट्रेट चौराहा, मोती तबेला चौराहा, हरसिद्धि, पंढरीनाथ, छत्रीपुरा और छत्रीबाग पर मटका-फोड़, हल्ला बोल प्रदर्शन किया। कांग्रेस ने पहले इन क्षेत्रों से पदयात्रा निकाली गई। जिसके बाद शहरभर में पानी की समस्या को लेकर कांग्रेस नेताओं ने नगर निगम परिषद के खिलाफ मटके फोड़े गए। कांग्रेस नेताओं ने नगर निगम महापौर, परिषद पानी दो-पानी दो नारे लगाए। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं ने कहा कि शहर के सभी 85 वार्डों में आम जनता पानी के लिए तरस रही है। विभिन्न बस्तियों में पानी की समस्या है और नगर निगम महापौर एवं परिषद मस्त है, जनता त्रस्त है। कांग्रेस शहर कार्यवाहक अध्यक्ष देवेंद्र सिंह यादव ने कहा कि शहर के 40 प्रतिशत से ज्यादा बोरिंग सूख गए हैं। कई जगह नर्मदा लाइन है पर पानी नहीं आ रहा है। फिर भी जनता को नर्मदा लाइन का बिल दिया जा रहा है। 85 वार्डों में पानी के टैंकर कम पड़ रहे हैं। कांग्रेस पार्षदों से भेदभाव किया जा रहा है। उनके क्षेत्र में पानी की समस्या बनी हुई है। जिन क्षेत्रों में नर्मदा की पाइपलाइन नहीं डाली गई है वहां की जनता बोरिंग और टैंकरों के भरोसे है,

अगले ढाई से तीन माह तक शहर में जलसंकट रहेगा

यादव ने कहा कि बार-बार बिजली जाने से लोगों को भीषण गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। मच्छरों का भी प्रकोप है। इसके अलावा पानी की किल्लत ने परेशान कर रखा है। ऐसे में नल में नर्मदा का साफ पानी आने के बजाय ड्रेनेज मिला काला और मटमैला पानी आ रहा है, जो पीने या अन्य किसी उपयोग में नहीं लिया जा सकता है। शहरवासियों को गंदे पानी की समस्या से भी परेशान होना पड़ रहा है। कई क्षेत्रों में पुरानी पाइप लाइनें सड़ गई या फिर टूट गई हैं, जिन्हें बदलना बहुत जरूरी है। नल में गंदा पानी आने की शिकायत नगर निगम मुख्यालय से लेकर जोनल ऑफिस, सीएम हेल्पलाइन, जलप्रदाय विभाग के अफसरों से की जाती हैं, मगर शिकायतों का निराकरण समय रहते नहीं होता और मुसीबत आमजन की हो जाती है।

पर कई बोरिंग सूख गए हैं और टैंकर भी नहीं पहुंच रहे हैं। उन्होंने कहा कि लोग सुबह से रात तक खाली बर्तन लेकर पीने के पानी के लिए भटकते रहते हैं। जनप्रतिनिधि, अधिकारी सिर्फ घोषणा ही करते हैं जबकि जमीनी हकीकत अलग है। वैसे भी एक दिन छोड़कर नर्मदा का पानी दिया जाता है और पैसे पूरे माह के लिए जाते हैं। होटल, ढाबों, अस्पतालों, इमारतों, निर्माण स्थलों में पानी बेचा जा रहा है।

नलों में गंदा पानी न आए इसकी ठोस कार्ययोजना क्यों नहीं ?

कांग्रेस नेताओं ने प्रदर्शन के दौरान कहा कि शहर में लोगों को पीने के लिए नर्मदा का साफ पानी देने की जिम्मेदारी नगर निगम के जलप्रदाय विभाग की है, मगर विभाग में तैनात डिग्रीधारी इंजीनियर अपनी यह जिम्मेदारी ठीक ढंग से नहीं निभाते हैं। सवाल तो यह है कि शहर में कहीं पर भी नलों में गंदा पानी न आए, इसको लेकर जलप्रदाय विभाग के अफसरों को सख्त आदेश दिए गए हैं, तो फिर इस आदेश का पालन क्यों नहीं होता? अफसर अपनी जिम्मेदारी निभाने में लेटलतीफी क्यों करते हैं? नलों में गंदा पानी न आए इसको लेकर ठोस कार्ययोजना क्यों नहीं बनती ? पानी और ड्रेनेज की नई लाइनें बिछाने के साथ पुरानी जर्जर लाइनों को क्यों नहीं बदला जाता? पानी सप्लाई को लेकर निगम जलप्रदाय विभाग थोड़ी ईमानदारी से काम कर ले तो जनता को काफी राहत मिल जाए।

बंदूक के लिए तालाब खाली कराने के मामले पर विवाद बढ़ा

पुलिस ने कहा- पानी को शिफ्ट किया, शिकायत को भी दिखवा जा रहा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के कनाड़िया थाना क्षेत्र में बंदूक ढूंढने के लिए तालाब खाली कराने का मामला सामने आया था। पुलिस का कहना है कि पानी को खाली नहीं बल्कि शिफ्ट किया है। रहवासियों ने शिकायत की है उसे भी दिखवा रहे हैं। दरअसल, 21 अप्रैल को ओम सांई विहार कॉलोनी खुड़ैल निवासी प्रहलाद पटेल ने शिकायत की थी। बताया था कि वह केयरवेल कंपनी चेतर सेंटर में गार्ड की नौकरी करता है। उसकी ड्यूटी बिचौली मर्दाना पर गनमैन के रूप में रहती है। 13 अप्रैल को वह अपनी 12 बोर की बंदूक वहीं भूल गया था।

अगले दिन वह नहीं मिली। कनाड़िया पुलिस ने उसकी रिपोर्ट पर चोरी का मामला दर्ज किया था। जांच में पता चला कि उसकी बंदूक को दूसरे गार्ड अनंत सिंह चौहान और ऋषिराज दुबे ने चोरी कर ली थी। शिकायत की जानकारी मिलने पर उन्होंने बंदूक के दो टुकड़े कर तालाब में फेंक दी थी। इसी बंदूक को तलाशने के लिए तालाब को खाली कराया गया था।

बंदूक को चुराकर तालाब में फेंक दी थी

एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया ने शनिवार को कहा कि सिक्योरिटी गार्ड ने कनाड़िया थाने में उसकी 12 बोर की लाइसेंसी बंदूक चोरी होने की शिकायत की थी। केस दर्ज कर जांच की गई। अन्य गार्डों से पूछताछ में पता चला कि बंदूक को उन्होंने चोरी कर तालाब में फेंक दिया था। एडिशनल डीसीपी ने कहा- तालाब में पानी और गाद थी। पहले गोताखोर की मदद से बंदूक निकालने का प्रयास किया गया लेकिन गाद ज्यादा होने से गोताखोर उसमें फंस सकता था। ऐसी स्थिति में तालाब के ही साइड में खाली जगह पानी को शिफ्ट किया गया तो बंदूक मिल गई। वहीं, रहवासियों की शिकायत को भी दिखवा रहे हैं।

भस्म आरती दर्शन

महाकाल के मस्तक पर चंद्र, त्रिपुण्ड और त्रिशूल के साथ रजत मुकुट अर्पित कर किया श्रृंगार

उज्जैन (एजेंसी)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार तड़के भस्म आरती के साथ भगवान महाकाल का अलौकिक श्रृंगार किया गया था। मंदिर के कपाट खोलकर सबसे पहले सभा मंडप में वीरभद्र जी के कान में स्वस्तिवाचन किया गया और घंटी बजाकर भगवान से अनुमति ली गई। इसके बाद सभा मंडप के चांदी के पट खोले गए और गर्भगृह के पट खोलकर भगवान का श्रृंगार उतारने की प्रक्रिया शुरू की गई।

पंचामृत से हुआ महाकाल का अभिषेक- भगवान महाकाल को जल अर्पित कर अभिषेक किया गया। इसके बाद दूध, दही, घी, शक्कर, शहद और फलों के रस से पंचामृत पूजन किया गया। कपूर से आरती उतारी गई। त्रिनेत्रधारी महाकाल को चंदन अर्पित किया गया और नंदीजी का स्नान, ध्यान और पूजन भी हुआ।

रजत मुकुट और रुद्राक्ष की माला से हुआ श्रृंगार- जटाधारी महाकालेश्वर को त्रिशूल, त्रिपुंड और चंद्र के साथ रजत मुकुट पहनाया गया। इसके साथ ही रुद्राक्ष की माला, भांग, चंदन, ड्रायफ्रूट और भस्म अर्पित की गई। शेषनाग स्वरूप रजत मुकुट, रजत की मुडमाला और सुगंधित फूलों से बनी माला भी भगवान को धारण कराई गई। पूजा के

बाद भगवान को फल और मिष्ठान का भोग अर्पित किया गया।

झांझ, मंजीरे और डमरू के साथ गूंजी भक्ति भस्म आरती के दौरान मंदिर प्रांगण डमरू, मंजीरे और झांझ की ध्वनि से गूंज उठा। बड़ी संख्या में श्रद्धालु मंदिर पहुंचे और भगवान महाकाल के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। महा निर्वाणी अखाड़े की ओर से भगवान को विशेष भस्म अर्पित की गई। मान्यता है कि भस्म अर्पित करने के बाद भगवान महाकाल निराकार से साकार रूप में प्रकट होते हैं और भक्तों को दर्शन देते हैं।

बिना एसी-पंखे के ठंडा रहेगा इंदौर का नया नगर निगम

20 साल तक रंग-रोगन की जरूरत नहीं, 452 करोड़ में बनेगा, 25 प्रतिशत हिस्सा रहेगा ग्रीन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर नगर निगम के लिए प्रस्तावित अत्याधुनिक और पर्यावरण अनुकूल मुख्यालय भवन के निर्माण को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। इस बिल्डिंग में दो खंडों में 8 मंजिलें होंगी। इसमें 45 विभागों के ढाई हजार कर्मचारियों के बैठने के इंतजाम किए जाएंगे। 500 लोगों की क्षमता के साथ जन शिकायत केंद्र भी बनाया जाएगा। यहां प्रदर्शनी हॉल और सार्वजनिक कैफेटेरिया भी होगा। इस प्रोजेक्ट की लागत 452.89 करोड़ रुपए है। यहां एक बार में 620 वाहन पार्क किए जा सकेंगे। बिल्डिंग का 25 प्रतिशत भाग हरा-भरा रहेगा। इसकी डिजाइन

ऐसी होगी कि बिना एसी और पंखों के भी ठंडक महसूस होगी। रोशनी भी पर्याप्त रहेगी। प्रत्येक फ्लोर पर बिजली बचत के उपाय किए जाएंगे। वहीं रूफ टॉप पर सोलर पैनल लगाए जाएंगे। रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम भी रहेगा। इसके साथ ही इस बिल्डिंग को अगले 20 साल तक रंग रोगन करने की जरूरत नहीं होगी।

म्यूजियम के साथ जिम और स्पोर्ट्स एरिया भी- बिल्डिंग में म्यूजियम का निर्माण भी किया जाएगा। दिव्यांग नागरिकों के लिए भी विशेष प्रावधान किए जाएंगे। महिला कर्मचारियों के लिए फीडिंग कक्ष के साथ सामान्य जिमिंग और स्पोर्ट्स के लिए भी स्थान तय रहेगा। प्रस्तावित बिल्डिंग का एंट्री पॉइंट ऐसा दिखेगा। दो खंडों में बंटी रहेगी ये बिल्डिंग। यहां लोगों से जुड़े ऑफिस नीचे ही रखे जाएंगे।

नई इमारत में इंदौर की सांस्कृतिक-स्वच्छता की झलक दिखेगी

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि यह भवन इंदौर की पहचान का प्रतिनिधित्व करेगा। उन्होंने निर्माण एजेंसी को निर्देश दिया कि भवन का इंटीरियर, डिजाइन और लेआउट इंदौर की संस्कृति, सभ्यता, स्वच्छता, व्यंजन, ऐतिहासिक धरोहर और विशिष्टता को प्रदर्शित करे ताकि देश-विदेश से आने वाले प्रतिनिधि इस शहर की पहचान से रूबरू हो सकें।

इंदौर में कार पर पलटा डंपर, 2 लोगों की मौत

कार काटकर निकालना पड़ा क्षत-विक्षत शव, हादसे में एक शख्स का हाथ कटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक तेज रफ्तार डंपर कार पर पलट गया। इस हादसे में कार सवार दो लोगों की मौत हो गई। एक शव कार को काटकर निकालना पड़ा। शव बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो गया। अभी मृतक की शिनाख्त नहीं हो पाई है। कार में सवार आस्था (उम्र 21 वर्ष) और उसकी मां शीतल अग्रवाल (उम्र 55 वर्ष), निवासी महू गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को इलाज के लिए एमवाय अस्पताल भेजा गया, जहां मां शीतल ने इलाज के दौरान दम तोड़ा दिया, जबकि बेटी आस्था की हालत नाजुक बनी हुई है। इसी हादसे में

एक युवक का हाथ भी कट गया है। युवक का नाम संस्कार बताया जा रहा है। उसे एक निजी अस्पताल में ले जाया गया है।

डंपर के नीचे फंस गई कार- हादसा शुक्रवार देर शाम को शहर के कनाडिया ब्रिज के पास बायपास पर हुआ। कनाडिया पुलिस के अनुसार- तेज गति से आ रहा एक डंपर बेकाबू होकर पलट गया। उसके नीचे एक कार फंस गई। कार सवार देवास से महू की ओर जा रहे थे। डंपर ने एक बाइक को भी टक्कर मारी, जिससे बाइक सवार घायल हो गया है।

पुस्तक समीक्षा

अजय बोकिल

मानवीयता की खुली दराज और संवेदना की खुशबू में पगी कहानियां

ऐसे कम ही रचनाकार हैं, जो शासकीय जिम्मेदारियों को निभाने के साथ साथ अपने भीतर के सर्जक को न सिर्फ जिंदा रख पाते हैं बल्कि अपनी रचनात्मकता से प्रभावित और आशान्वित भी करते हैं। 'खुली दराज और बिखरी खुशबुएं' कथाकार संजय जैन का लक्षणीय कथा संग्रह है। संजय पहले मीडिया से जुड़े रहे हैं और बाद में शासकीय सेवा में हैं। वो स्वार्थी राजनेताओं के कैरेक्टर, सरकारी महकमों के काम करने की शैली और भ्रष्टाचार तथा बिकाऊ मीडिया के असली चेहरे से भी वाकिफ हैं। लिहाजा इन सभी क्षेत्रों के अंतर्बाह्य चरित्र को उन्होंने बहुत करीब से देखा, समझा है और इसे ही अपनी कथाओ की विषयवस्तु बनाया है। वो अपनी बात साफगोई से कहते हैं और नैतिकता तथा संवेदनशीलता के पक्ष में खड़े दिखते हैं। बतौर लेखक संजय जैन ने अपनी प्रभावी भूमिका में वर्तमान के आपाधापी भरे दौर में संवेदनाओंके अकाल पर गहरी चिंता जताई है। वे लिखते हैं कि आज समाज में नैतिकता की जिद रखने वाले थोड़े से लोग ही आशा की किरण हैं। यही जिद अच्छे समाज के निर्माण की संरचना का मजबूत आधार है।

मानवीय पक्षधरता की पैरवी करते हुए संजय जैन लिखते हैं कि इसे बचाने में सामाजिक निष्ठा और सांस्कृतिक आस्था के साथ जीवन के नैतिक मूल्य ही हैं, जो रामराज्य के सामाजिक सौंदर्य के करीबी ले जा सकते हैं। सामाजिक मूल्यों का पतन, सांस्कृतिक क्षरण और पूंजी के बढ़ते दबाव से समाज दुख, अभाव और शोषण के ऐसे मुहाने पर खड़ा है, जहां संघर्ष के विकल्प बहुत कम हैं। लेकिन इन थोड़े से विकल्पों में जो कमजोर लोग संघर्ष की राह खोज लेते हैं तथा उसी से जीवन के लिए खुशी, ऊर्जा और उम्मीद पैदा कर लेते हैं, ऐसे लोगों की संघर्ष कथा ही मेरी रचना्त्मकता का हिस्सा बनती है। इन मामूली लोगों की संघर्ष कथा में उम्मीद की लौ मुझे मुझे हमेशा आश्वस्त करती। मैं अपनी रचनात्मकता के सूत्र यहीं खोजता हूं। अपने समय और समाज के यथार्थ को देखने, समझने और उस अनुभव को प्रकट करने के लिए मुझे कहानी का माध्यम उपयुक्त लगा। मैंने पूरी कोशिश की है कि अनुभव की अभिव्यक्ति को संवेदना का आधार मिले। लेखक के मुताबिक उसकी कोशिश है कि इस संग्रह में मध्य वर्ग की कहानियों के अतिरिक्त राजनीतिक रूझान और बाजार केन्द्रित कहानियां भी शामिल रहें।

प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस कथा संग्रह में कुल 22 कहानियां हैं। ये सभी पठनीय और समाज और व्यवस्था की जमीनी हकीकत से रूबरू कराती हैं। कथाओं के अधिकांश पात्र आम लोग हैं, जो बेहतर जीवन की तलाश, अपने लक्ष्य को पाने

के संघर्ष और उम्मीदों की दुनिया में जीते हैं। लेकिन 'सच का सामना' उनके सपनों की दुनिया को गहरा झटका देता है। संग्रह की पहली कहानी 'खुली दराज और खुशबुएं' सबसे सशक्त और लीक से हटकर कहानी है। शिल्प में भी और भाव में भी। इस कथा में दो आधुनिक कॅरियरवादी युवक और युवतियों का अनकहा प्रेम है, जो किसी पुस्तकों से भरी खुली दराज सा है, जिसमें एक आत्मिक सुंगध है, जिसे सिर्फ महसूसा जा सकता है। जब मोहब्बत की हवा और प्रणय की किरणें एक साथ छलांग मारती हैं तो अव्यक्त प्रेम भी हरसिंगार, रातरानी और मोगरे के फूलों की खुशबू से महक उठता है। इस कहानी की खूबी यह है कि इसमें संवाद बहुत कम है। कथाकार ने प्रकृति के बिम्बों को बड़ी सुघड़ता से सम्प्रेषण का माध्यम बनाया है। 'ग्रीन बेल्ट' कहानी में एक भूमाफिया मीडिया का अपने हित में कैसे इस्तेमाल कर लेता है, इसकी सचबयानी है। इसी तरह 'अपराध' कहानी में देसी मिठाई और परदेशी चाकलेट के मा्ध्यम से व्यावसायिक नैतिकता, नई पीढ़ी की बदलती सोच व जमीनी हकीकत को उजागर किया गया है। 'सब चुप हैं' कहानी जंगल विभाग की विसंगति और भ्रष्ट मानसिकता को बेनकाब करती है, जो बिल्ली के बच्चे को तेंदुए का बच्चा सिद्धा करने पर आमादा है और कोई इसके खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाता।

'गायब तालाब' समूचे सरकारी तंत्र की झूठ को बचाने की निर्लज्ज कोशिश का आख्यान ही है। गांव से एक तालाब ही गायब हो जाता है। जनता इसको लेकर राजा के पास जाती है तो पता चलता है कि तालाब महारानी के यहां शिफ्ट करा दिया गया है। जनता की शिकायत पर राजा कहता है कि अभी कुएं से काम चला लो। उस गांव के लोग हर साल तालाब की खोज में निकलते हैं, लेकिन उनके हाथ तालाब की कोई खबर लग जाए।

'पुतला दहन' इस कथा संग्रह की अत्यधिक मार्मिक और झकझोर देने वाली कहानी है कि कैसे राजनेता अपने स्वार्थों के लिए छोटे कार्यकर्ताओं को दोहन करते हैं। एक राजनीतिक पार्टी का कार्यकर्ता राजू अपनी बहन को महंगी ड्रेस दिलवाने के लिए अपने नेता की खातिर आत्मदाह करने को तैयार हो जाता है। इससे नेता की दुकान तो जम जाती है, लेकिन राजू अपनी जान गंवा बैठता है। मरने के बाद कोई मातमपुरसी के लिए भी नहीं आता। संजय जैन मीडिया जगत के दागो को उजागर करने में नहीं झिझकते। कहानी 'बस एक खबर' में संपादक और रिपोर्टर मालिकों के दबाव में किस तरह काम करते हैं और कैसे एक स्वाभिमानी रिपोर्टर नौकरी के लिए उसूलों से समझौता करने से इंकार कर देती है, यह हकीकत पूरी शिद्दत से बयां करती है। ये तमाम कहानियां इस बात की जमानत भी है कि संजय जैन अपने शासकीय दायित्वों के साथ साथ भीतर केकहानीकार को भी इसी तरह जिंदा रखते हैं तो हिंदी कथा साहित्य और समृद्ध होगा।

नाम की चाह ना होती तो कोई कुछ करता ही क्यों?

वक्रोक्ति

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

जो लोग ऐसा कह गये हैं कि नाम में कुछ नहीं धरा मै उनसे सहमत नही। जो कुछ धरा है नाम में ही धरा है।रामजी वाली लोककथा सुनी ही होगी आपने। लंका जाते वक्त नल और नील राम का नाम लिखकर पत्थर तैरा रहे थे जबकि राम ने अपना नाम लिखे बिना जो पत्थर डाले समुद्र में, वो डूब गए। तभी से कहावत चल पड़ी कि राम से राम का नाम बड़ा है।

आदमी जो कुछ भी करता है नाम के लिये ही करता है। हमारे यहाँ तो औलादें भी नाम बनाये रखने के लिये पैदा की जाती हैं। दुनिया के सारे नेक कामों के पीछे भी नाम का झंडा लहराने की इच्छा छुपी हुई है। सारी कलायें, साहित्य, अविष्कार, राजनीति केवल इसीलिए लिए हैं कि हमारा नाम याद रखा जाए। ग़रीबी और सादगी से भी नाम कमाना चाहते है लोग और अमीरों की और अमीर होने की कोशिशें भी नाम के लिये ही हैं। युद्ध करने वाले और शांति का झंडा उठाने वाले भी नाम के ही अभिलाषी हैं। अजीबोग़रीब कपड़े पहने वालें हो या नंगे रहने वाले सभी नाम की दौड़ में हैं। सोच समझ कर बोलने वाले और गाल बजाने वाले सभी अपना नाम करना चाहते हैं। यहाँ तक की दुनिया भर के धतकरम करने वाले भी यह सोच कर सीना ताने रहते हैं कि बदनाम होने पर भी नाम होता ही है।

नाम बना रहे यह सोच ना होती तो कोई कुछ करता ही क्यों? फिर तो दुनिया के सारे मंदिर, मस्जिद चर्च और क़िले जैसे स्थापत्य, संगीत, राग रागनियाँ, चित्र, बड़े बड़े नगर, राज्य, इन सब के लिये सोचना, मेंहनत करना धन और वक्त की बर्बादी ही होती। लोग पेट भर कर खाने और लंबी तान कर सोने में भी खुश हो सकते थे पर आदमी नाम कमाने के चक्कर में पड़ा और इसीलिये दुनिया ने वो शक्ल हासिल की जो आज हम देख पा रहे हैं।

और फिर नाम की चिंता करने में हम हिंदुस्तानियो का कोई जवाब ही नहीं।पुरानी इमारतों, पेड़ों यहाँ तक की बाप के ख़रीदे स्टील के लोटे तक पर भी अपना नाम खोदने, खुदवाने वाले बड़ी आसानी से मिल जाएँगे आपको।दूसरों की लिखा पढ़ी पर अपना नाम दर्ज कर वाहवाही लूटने वाले भी रोज टकराते ही हैं हम सभी से। हम मानते हैं कि दर्शन कितने भी छोटे हों पर नाम बड़ा होना चाहिए। नाम होना और नाम बना रहना ही हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता रही है और हमेंशा बनी रहेगी।

आमिर खान भी केवल इसलिए पैदा हुए क्योंकि उनके पापा को लगता था कि बेटा हमारा बडा नाम करेगा। लोग मरे जा रहे है अपना नाम करने के लिए। नही कर पाते तो बात बात में यह बताना याद रखते हैं कि फलाना मेंरा बाप है। आदमी गुमनाम नही रहना चाहता इसलिए हाथ पाँव हिलाता है। सोचता है। अच्छे खराब सारे काम नाम के निमित्त। हिटलर का नाम भी याद है सभी को और गांधी का भी, ऐसे में शेक्सपियर का यह कहना कि नाम में कुछ नही धरा सिरे से ख़ारिज कर दिए जाने जैसा है।

नाम से ही नामी होता है आदमी। ऐसे में जो भी समझदार होते है अपने नाम को बड़ा करने की हर मुमकिन कोशिश करते है और जो ऐसा कर पाते है वो ही बड़े होते है।

पत्रकार डॉ. देवेन्द्र जोशी की पुस्तक का लोकार्पण

उज्जैन। रचनाधर्मिता के प्रत्येक क्षेत्र में देवेन्द्र जी ने लेखन किया है किन्तु यात्रा वर्णन विधा विरल है। यात्रा वर्णन की शैली ,कला से संपन्न होकर ही रचनाकार आकर्षण उत्पन्न करता है जिससे यात्रा वृतान्त रोचक हो जाता है। सौन्दर्य वस्तु में नहीं है बल्कि सौन्दर्य दृष्टा में होता है और देवेन्द्र जी के पास वह दृष्टि थी जो ऐसे यात्रा वृतांत को साहित्यिक बना देती है। जाता है और यात्रा वृतान्त आधुनिक गद्य विधा के रूप में स्वीकृत है और देवेन्द्र जी की यह पुस्तक भी यात्रा वृतांत की शैली को आगे बढाती है। प्रमुख वक्ता विक्रम विविवि के कुलानुशासक डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा ने कहा कि देवेन्द्र जी की यह पुस्तक तीर्थाटन संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और इस पुस्तक को पढ़ते हुए भारत की सांस्कृतिक चेतना से गुजरना है। पुस्तक का यात्रा वृतांत देवेन्द्र जी की उपस्थिति, सीमा जी के लिए हर यात्रा तीर्थ बन गई चाहे वह पर्यटन स्थल ही क्यों न हो । लोकार्पण प्रसंग का शुभारम्भ अतिथियों ने माता सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप आलोकन से किया।

प्रारंभ में सीमा देवेन्द्र ने पुस्तक परिचय दिया। अतिथियों का स्वागत मध्यप्रदेश लेखक संघ के सचिव डॉ. हरीशकुमार सिंह, मुकेश जोशी,संदीप

ये विचार विक्रम विवि के पूर्व कुलपति आचार्य बालकृष्ण शर्मा ने, मध्यप्रदेश लेखक संघ के तत्वावधान में, प्रेस क्लब में आयोजित, प्रख्यात पत्रकार और साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी की पुस्तक ' जिन्दगी लाइव ' के लोकार्पण प्रसंग में सारस्वत अतिथि के रूप में व्यक्त किये। मुख्यअतिथि इग्नो के पूर्व कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने कहा कि यह पुस्तक पर्यटन विषय के छात्रों के लिए बहुत उपयोगी है और नए लेखकों को एक नया रास्ता दिखाती है और पुस्तक का प्रसार वैश्विक पटल पर होना चाहिए। विशेष अतिथि मालवी साहित्यकार प्रो. शिव चौरसिया ने कहा कि हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतांत लिखने का सूत्रपात भारतेंदु से माना वैयक्तिकता, आत्मिकता, रोचकता और कल्पनाशीलता से परिपूर्ण है। अध्यक्षीय उद्बोधन मध्यप्रदेश लेखक संघ के अध्यक्ष प्रो. हरिमोहन बुधौलिया ने देते हुए कहा कि देवेन्द्र जी की यह पुस्तक नागार्जुन और अज्ञेय की परम्परा को आगे बढाती है। देवेन्द्र जी की इस पुस्तक के प्रकाशन पर श्रीमती सीमा देवेन्द्र ने अपनी बात कहते हुए कहा कि इस पुस्तक में देवेन्द्र जी की पारिवारिक यात्राओं का वृतांत है।

लोकार्पण प्रसंग में मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक श्री विकास दवे के ऑडियो सन्देश का प्रसारण भी किया गया जिसमें दवे जी ने, देवेन्द्र जी की साहित्य के प्रति लगनशीलता बताते हुए कहा कि सृजन,अपूर्व जोशी, कुमकुम जोशी ,प्रणव गर्ग, सन्दीप जोशी, दौलत खेमचन्दानी, सीमा देवेन्द्र आदि ने किया। सरस्वती वंदना राजेश राज ने और गणेश वंदना डॉ. राजेश रावल ने प्रस्तुत की। लोकार्पण प्रसंग में श्रीराम दवे, डॉ. प्रकाश कड़ोतिया, श्रीकृष्ण जोशी, माया बदेका, डॉ. पुष्पा चौरसिया, डॉ. क्षमा सिसोदिया, चित्रा जैन, आर पी तिवारी, संतोष सुपेकर, प्रफुल्ल शुक्ला, हरिहर शर्मा, सुगनचंद जैन, राजेश ठाकुर, डॉ. रफीक नागोरी, विजय सुखवानी, दिलीप जैन, दिव्या शर्मा ,राखी शर्मा आदि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. हरीशकुमार सिंह ने किया और आभार डॉ. उर्मि शर्मा ने व्यक्त किया।

कहानी

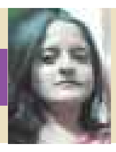

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

अपनी जिम्मेदारी

अभी तो दोपहर के दो ही बजे हैं और बिजली चली गई। अंकिता मन ही मन बड़बड़ाई।

पढ़ रही किताब के पन्ने के बीच पेन रखकर किताब को बंद कर देती है। वह कमरे से बाहर निकलती है।

वाह... कितना सुहाना मौसम है आज। बालकनी की तरफ बढ़ते हुए वह खुश होती है।

कई दिनों की तेज लू वाली गर्मी के बाद आज आसमान में चारों ओर बादल छाए हुए हैं, हवा भी तेज चल रही है। ऐसा लग रहा है कि आंधी वाली बारिश होगी। अंकिता खुली बालकनी से आसमान की ओर देखकर ठंडी हवाओं का आनंद ले रही है,

तभी पीछे से तेज आवाज आती है, दिन भर रूम में बैठी रहती है, तुम्हें घर में कुछ काम नहीं दिखता?

अंकिता सहम जाती है, लेकिन तुरंत ही संभलकर बोलती है, क्या हुआ? मैं दिन भर रूम में बैठी रहती हूँ? मुझे भी अपना काम होता है।

तुम छत से कपड़े नहीं ला सकतीं? पंद्रह मिनट कपड़े लाने में तुम्हारी पढ़ाई छूट रही है? अंकिता की चाची चिल्लाते हुए बोलीं।

मैंने पहले भी कहा है कि मैं जब फ्री रहूँगी, जो करना है, धीरे-धीरे ही सही, करूँगी। अंकिता बोली।

तुम्हारा ये बहाना है, तुम कुछ नहीं करोगी चाची चिल्लाती रहीं।

देखिए... मैं अपनी पढ़ाई के बीच घर का काम करने नहीं उठूँगी। जो मेरे लिए ज्यादा जरूरी है, पहले मैं वही करूँगी। अंकिता को भी गुस्सा आ जाता है।

नहीं... करोगी, तो मैं करूँ क्या? चाची गुस्से में बोलीं।

आप भी मत करो, मैंने थोड़े कहा है। मैं अपनी जिम्मेदारी आपको थोड़े दी है। और भविष्य में मुझे अपनी जिम्मेदारी खुद लेनी है, इसलिए मुझे जो काम ज्यादा जरूरी है, पहले वही करूँगी। अंकिता गुस्से में जवाब देकर छत पर चली जाती है।

छत पर पहुँचकर अंकिता ने कपड़े उतारने शुरू किए। हवा अब और तेज हो चुकी थी, और बादल गड़गड़ा रहे थे। उसने कपड़े तह करते हुए एक कोने में बैठ गई। आसमान की ओर देखते हुए उसका मन उथल-पुथल में था।

हद है लोग! न खुद मेहनत की सोचते हैं और न दूसरों को मेहनत करने देते। इनके लिए ज्यादा जरूरी घर का काम करना, खाना और सोना है। वो भी अपना ही तो करते हैं, मेरी थोड़े जिम्मेदारी उठाएँगे जिंदगी भर। किसी को प्रोत्साहित करना भले ही इन्हें न आता हो, लेकिन दूसरों की टाँग खींचना अच्छे से आता है।÷ वह चिंतित हो रही थी।

तभी उसकी नजर छत के एक कोने में पड़े एक पुराने टिन के डिब्बे पर पड़ी। वह उसके पिता का था, जिसमें उन्होंने अपनी कुछ यादें संजो रखी थीं। अंकिता ने डिब्बा उठाया और खोला। उसमें एक छोटी डायरी थी, जिसके पन्ने समय के साथ पीले पड़ चुके थे।

डायरी खोलते ही उसे अपने पिता की लिखावट दिखी

बेटी, सपने वो नहीं जो सोते वक्त देखे जाते हैं। सपने वो हैं जो तुम्हें सोने न दें। चाहे कितनी आंधियाँ आएँ, अपनी मंजिल की ओर बढ़ते रहो।

यह पढ़कर अंकिता की आँखें नम हो गईं। उसने डायरी को सीने से लगाया और मन ही मन बोली, पापा, आपने मुझे हमेशा मेहनत करने की प्रेरणा दी। मैं आपके सपनों को पूरा करूँगी।

डायरी के साथ उसे एक पुरानी तस्वीर मिली, जिसमें वह अपने पिता के कंधों पर बैठी थी, और दोनों हँस रहे थे। उस तस्वीर को देखकर उसका मन और भारी हो गया, लेकिन साथ ही एक नया जोश भी जगा।

अंकिता ने आसमान की ओर देखा। बादलों की गड़गड़ाहट अब और तेज हो चुकी थी। उसे लगा जैसे यह आंधी उसकी जिंदगी की तरह है–तूफानी, लेकिन इसके बाद बारिश की ठंडक भी तो आएगी। उसने मन में ठान लिया कि वह इन तानों और रुकावटों को अपने सपनों के आड़े नहीं आने देगी। तभी छत पर एक छोटा सा गमला पड़ा दिखा, जिसमें एक पौधा हवा में झूल रहा था।

अंकिता ने गमले को ठीक किया और सोचा, यह पौधा भी तो आंधी में डटकर मुकाबला कर रहा है। मैं क्यों नहीं?

वह कपड़े तह करके नीचे जाने लगी, लेकिन मन में एक नई उमंग थी। नीचे आने से पहले उसने छत पर खड़े होकर एक गहरी साँस ली और खुद से कहा,

अंकिता, तू कर सकती है।

थोड़ी देर बाद अंकिता कपड़े लेकर नीचे आई। रोज की कलह से उसका मूड खराब हो जाता था और तब पढ़ाई में भी मन नहीं लगता। थोड़ी देर बाद अंकिता की मम्मी ऑफिस से आ गईं। चाची उनकी मम्मी से उसकी शिकायत करने लगीं।

घर में एक काम नहीं करती, दिन भर रूम में घुसी रहती है, दीदी। चाची अंकिता की मम्मी से बोल रही थीं।

अंकिता... मम्मी अंकिता को आवाज देती हैं।अंकिता सामने आकर खड़ी हो जाती है।

घर में कुछ काम क्यों नहीं करती? मम्मी ने पूछा।

मेरा काम और आपका काम क्या दूसरे लोग करते हैं? मुझे पढ़ाई से जब भी समय मिलता है, उसी समय एक-एक कर काम करती हूँ। नौकरी के लिए कॉम्पिटिशन इतना आसान होता है क्या, जो थोड़ा-बहुत पढ़ें और पास कर लें? अंकिता बोली।

अंकिता चाय बनाने रसोई में चली जाती है और मन ही मन खुद को मजबूत करते हुए सोच रही है, ÷पिता का न होना, जिंदगी में कितना कष्ट है। मुझे किसी की सोच या बात का फर्क नहीं पड़ना चाहिए। लोग तो सुधरेंगे नहीं और मेरे दिमाग में इन बातों का तनाव बना तो मेरी पढ़ाई छूटेगी, मेरा करियर बर्बाद होगा। जो चीजें मैंने देखी हैं, मुझे किसी के भरोसे जिंदगी नहीं काटनी, बल्कि मुझे दूसरों का सच्चा भरोसा बनना है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

श्याम कुमार कोलारे

एक कोना भर बुढ़ापा

शहर से लौटते हुए कदम खुद-ब-खुद उस रास्ते की ओर मुड़ गए, जहाँ कभी मेरी ज़िंदगी की सबसे कीमती सीखें मिला करती थीं। वो पुराना सा घर, जिसके आँगन में खेलते हुए मैंने बचपन जिया था। वहीं खाट पर बैठा एक बूढ़ा चेहरा, जो कभी मेरी हर जिज्ञासा का जवाब होता था–आज एक थकी हुई परछाई बन गया था।

बाबा! मैंने पुकारा।

धूप से झुलसी झुर्रियों वाली आँखें हल्के से खुलीं और एक धीमी आवाज आई–

कौन? कान्हा है क्या?

हाँ बाबा, मैं ही हूँ...

वो हल्की सी मुस्कराहट, जिसमें एक बनावटी जीवन्तता छिपी थी, चेहरे पर उभरी।

कैसे हो बाबा? बड़े कमजोर लग रहे हो

बाबा ने मज़ाकिया लहजे में कहा,

कमजोर तो हूँ बेटा, उम्र तो 60 की है, पर लगता है जैसे 80 पार कर चुका हूँ

मैं मुस्कुराया, पर उस मुस्कान में चिंता थी।

पर बाबा, सब तो ठीक है न? अच्छा घर है, सब साथ हैं, फिर क्या हुआ जो आप इतने बुझ से दिखते हैं? एक साल पहले जब मैं गया था, तो आप वही सजीले, ऊर्जावान बाबा थे... अब ये उदासी क्यों?

शायद मेरे सवाल ने उनके भीतर की चुप्पी को तोड़ दिया। उन्होंने मुझे पास बैठने का इशारा किया।

धीरे से बोले–

बेटा, मेरे इस हाल को समझना है, तो थोड़ा अतीत में झांकना पड़ेगाज्सुनोगे?

मैंने सिर हिलाया।

शादी के एक साल बाद तक अपने पिता के साथ रहा। पर माँ के गुज़रने के बाद मौसी माँ ने मुझसे जैसे दूरी बना ली। एक दिन उन्होंने साफ कह दिया–अब तुम यहाँ से चले जाओ। और पिताजी ने भी कुछ नहीं कहा... बस चुप रहे।

बाबा की आवाज़ अब भी शांत थी, पर उसमें एक गहरी टीस थी।

तब पत्नी का हाथ पकड़ा और यहाँ, अपने ससुराल में आ गया। तीन साल यहीं रहा, पूरी इज़्ज़त मिली, सबके साथ घर संभाला। पर कब तक ससुराल में रहा जा सकता है? एक खेत के कोने में झोपड़ी बना ली और वहीं से ज़िंदगी की असली लड़ाई शुरू हुई।

उन्होंने लंबी साँस ली और बोले–

मजदूरी की, शहर जाकर हमाली की। दिन के 50-80 रुपये मिलते थे। पर मन में सपना था–अपने बच्चों को पढ़ाना है, उन्हें आगे बढ़ाना है। बेटियों को जितना बन पड़ा, पढ़ाया-लिखाया। बेटे को इंजीनियर बना दिया।

उनकी आँखों में एक पल को चमक आई।

आज वो अच्छा कमा रहा है, और भगवान से यही दुआ करता हूँ कि उसका भला हो, तरक्की करे।

फिर उनके स्वर में एक उदासी घुल गई–

वही बेटा, जिसने इस घर को सजाया, उसकी सलाह से बदलाव हुए। और अब...

वो रुक गए। मैं जानता था, आगे जो कहेंगे, वो दर्द से भरा होगा।

अब हम उसी घर में स्टोर रूम में रहते हैं बेटा। जहाँ कभी बच्चों के खिलौने और टूटे सामान रखे जाते थे, अब वहीं हम दो बुज़ुर्ग हैं।

उनकी आँखें भर आईं।

खाना भी अलग बनाते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे हमारे लिए इस घर में कोई जगह ही नहीं। जैसे हम बोझ हो गए हैं...

मैं चुप था। मेरे भीतर कुछ टूटने लगा था।

हम सोचते थे कि बुढ़ापे में सुकून मिलेगा, बेटा-बहू सेवा करेंगे, पर अब लगता है, हमारी जरूरत ही खत्म हो गई है।

बाबा की आँखों से आँसू बहने लगे।

हमने ये घर खून-पसीने से बनाया, सपना देखा था कि यही हमारा आखिरी ठिकाना होगा, पर अब लगता है, बस एक कोना भर है हमारे हिस्से में।

मैं कुछ कह नहीं पाया। जैसे मेरे भीतर एक सन्नाटा भर गया हो।

बाबा कुछ और कहना चाहते थे, पर शब्द उनके गले में ही अटक गए।

उनकी आवाज़ सिसकियों में बदल गई थी।

मैंने उनके कांपते हाथों को थामा।

उनके स्पर्श में अब वो गर्माहट नहीं थी, जो बचपन में हुआ करती थी।

वो ठंडा, थका हुआ और अकेला था।

बाबा मैंने कहा,

आपने हमेशा मुझे सिखाया कि जीवन संघर्ष से भरा है, लेकिन उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए। आप तो मेरे आदर्श रहे हैं, और रहेंगे। मैं वादा करता हूँ, अब आपको कभी अकेला नहीं छोड़ूंगा।

बाबा ने मेरी ओर देखा, आँखों में कुछ विश्वास लौटा।

वो मुस्कराए, एक असली मुस्कान, जो दिल से निकली थी।

उस दिन मुझे समझ आया कि बुजुर्गों के लिए बुढ़ापा एक शारीरिक अवस्था नहीं, बल्कि सामाजिक उपेक्षा की परिणति है। जिस घर को उन्होंने बनाया, उसी में उन्हें एक कोना देकर भुला दिया जाता है।

एक कोना- बुढ़ापा–ये सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि एक सच्चाई है जो हर गली, हर मोहल्ले के किसी बाबा या दादी के जीवन में कही न कही घट रही है।

हमें सोचना होगा–क्या हम भी अपने अपनों को सिर्फ एक कोने में सिमटा रहे हैं।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

एकांतवास में ही सृजन संभव है: नंद कात्याल

पेंटिंग शुरू करने से पहले हम किसी प्रेरणास्रोत का इंतजार नहीं करते बल्कि यह हमारे लिए एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसे हमें करना ही पड़ता है नहीं तो ऐसा लगता है जैसे हमने सांस ही नहीं लिया, जीवन का अहम हिस्सा बन गया है पेंटिंग, ये कहना था बारह वर्ष की अवस्था में देश विभाजन के बीभत्स समय में लाहौर से दिल्ली आ बसे कलाकार नंद कत्याल जी का जिनके पिता श्री रामलाल कत्याल भी एक अच्छे कलाकार थे जिसकी वजह से नंद का साथ बचपन से ही रंगों से था फलत- विभाजन के समय के दर्द का रंग इनपर उतने गहराइयों से असर नहीं दिखा सका हालांकि इनके द्वारा ये भी स्वीकारा गया था कि कला में झुकाव मेरा नहीं था मैं तो फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथ लेकर पढ़ाई कर रहा था पर होनी को कौन टाल सकता है जिसे शिक्षा के मुताबिक एक इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि-आदि होना था, एक मशहूर चित्रकार हुए। अपनी एक अलग पहचान लिए चटख रंगों से मन के बेचैन बादल को कैनवास पर बिखेर कर, विरेचनावस्था को प्राप्त कर एक विजयी की भांति हर दिन नये कैनवास पर खुद के मनोभावों को बिखेरने हेतु बेचैन रहने वाले नंद जी सृजन के समय एकांतवास के होकर रह जाते थे।

उस समय किसी का भी खलल भावों के बादल को छिटका देने हेतु काफी होता हैं। इस बातचीत के दौरान मैं भी उनके एकांतवास में खलल जैसा ही था पर उनका बड़प्पन ही था कि मुझे निराश नहीं होना पड़ा। हां पेंटिंग के पूरा होने तक इंतजार जरूर करना पड़ा था। उम्र के उस पड़ाव पर भी पेंटिंग के प्रति ऐसा जुनून अचंभित भी करता है साथ ही युवाओं को प्रोत्साहित भी। 30 जनवरी 1935 में लाहौर में जन्मे नंद जी के चित्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहे जाते रहे हैं। ललित कला अकादमी के पुरस्कार चयन समिति में भी इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। तमाम सम्मान से विभूषित नंद जी के चित्र राष्ट्रीय आधुनिक संग्रहालय नई दिल्ली, भारत भवन भोपाल के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण जगहों पर भी देखे जा सकते हैं। नन्द कात्याल जी लोधी गार्डन के एक विद्यालय में कला के शिक्षक के रूप में वर्षों कार्य करने के बाद शाम की कला की क्लासेज भी शुरू कर दिए थे। उनका कहना था कि- आर्ट स्कूल में हमारे बहुत अच्छे-अच्छे शिक्षक थे, स्टूडेंट्स का भी एक ग्रुप बना था वी अननोन नाम से जिनमें अधिकतर मॉर्निंग के स्टूडेंट थे, मैं भी छठे साल में आ गया था और ग्रुप में शामिल हो गया था। आर्ट स्कूल के अंदर एक गैलरी हुआ करती थी। हम लोग काम तो अलग-अलग किया करते थे पर गैलरी में काम साथ ही प्रर्दशित होते थे सभी एक दूसरे का काम देखा करते थे वार्षिक प्रदर्शनी भी होती थी?। वी अननोन के बारे में बात करते हुए नंद जी कहते हैं कि ये तो स्कूल पीरियड में ही शुरू हो गया था जो आजकल के फेमस आर्टिस्ट है अर्पिता, परमजीत वगैरह ये सब उसी के फाउंडर हैं दो-तीन साल उसकी प्रर्दशनी हुई है फिर जैसा होता है अक्सर काफी लोग बाहर चले गये, कोई कहीं चला गया। शैलोज मुखर्जी के बारे में भी विस्तार से बात करते हुए बताते हैं कि- शैलोज मुखर्जी साहब मुझको कई बार अपने साथ अपने घर ले जाते थे और कहते कि देखो मैं कैसे पेंटिंग करता हूं तो ये चीजें जो थीं, बहुत इफेक्टिव थी माने क्लास से तो हम सीखते ही थे बाहर भी हमेशा स्टूडेंट के ही रूप में पेश आते थे शैलोज साहब के साथ हम चल रहे हैं कहीं साया दिख गया बोले ये देखो, देखो ये पेंटिंग, सब्जी की मार्केट देखी, देखो ये क्या है, ये पेंटिंग है उन्होंने मुझे कई बार दिखाया कि शेडिंग की क्या भूमिका होती है एक कलाकृति में। त्रिवेणी कला संगम और स्पैन से संबंधित प्रश्न पर वो कहते हैं कि- जब मेरे आर्ट स्कूल का कोर्स खत्म हुआ हमारे एक दूसरे बड़े टीचर थे दिनकर कौशिक जी जो बाद में लखनऊ के प्रिंसिपल बने, उन्होंने मेरी बड़ी सहायता की। उन्होंने कहा कि हमारे त्रिवेणी कला संगम में एक क्लासेज होती है अब तो तुम्हारी क्लासेस खत्म हो गई है तो वहां आ जाया करो मैंने कहा ये तो बढ़िया बात है। मिस्टर के.एस. कुलकर्णी साहब वहां के डायरेक्टर होते थे, कौशिक साहब ने अपना स्टूडियो मुझे दे दिया था वहीं त्रिवेणी के अंदर। उस वक्त वह शुरू

हुआ था मैं वहां पर बड़ी खूबसूरती से काम कर रहा था। 61 के एंड में मैं वहां गया था 62 में उन्होंने कहा कि जो तुम्हें स्कूल में सैलरी मिलती है वही हम तुम्हें दे देंगे तो मैंने स्कूल की नौकरी छोड़ दी फिर हम वहां पर काम करते रहे। 62 में जो हमारा वी अननोन का शो हुआ था उसमें एडवर्ड पोस्ट जो स्पेन पत्रिका के एडिटर थे, आये, उनके साथ जेहरा रहमतुल्ला जो एक आर्टिस्ट थीं, भी आई हुई थी। उस प्रदर्शनी में उन्होंने दो पेंटिंग खरीदी एक मेरी और एक बोयेन की, वो तो अब नहीं रहे। पेंटिंग खरीदने के बाद उन्होंने कहा कि आप लोग जब पेंटिंग देने मेरे ऑफिस आओगे मैं पैसे वहीं दे दूंगा। जब हम वहां पहुंचे उन्होंने मुझे एक आर्टिकल दिया और कहा कि इस आर्टिकल को पढ़कर आपके मन में जो भी आए पेंट कर दो। इसको आप इलस्ट्रेशन समझ के मत करिये बल्कि पेंटिंग के रूप में करिये। मेरे पास इमेज़ेज है अभी भी। मैंने दो पेंटिंग बनाई, 300 रूपये एक पेंटिंग के मिले। मैं तो बहुत खुश हो गया पता है जो पेंटिंग मैंने अभी बेची थी जिसे लेकर मैं ऑफिस आया था उसकी कीमत मात्र 120 रूपये थी। उस समय पेंटिंग की प्राइज़ ऐसे ही होती थी, डेढ़ सौ दो सौ रूपए। हुसैन साहब की पेंटिंग उन दिनों 400 में मिल जाती थी। हमने वह दो पेंटिंग बड़े शौक से बनाई थी जिसका शीर्षक था लोनली। इधर त्रिवेणी में मैं पढ़ाया करता था सुबह 2 घंटे और शाम को 2 घंटे बीच में फुर्सत ही फुर्सत। नीचे खूबसूरत स्टूडियो था जहां मैं पेंटिंग किया करता था।

स्पेन के एडिटर साहब मुझसे काफी पोर्टेट बनवाएं, शुरू में मैं लैंडस्केप और पोट्रेट ही बहुत ज्यादा बनाता था अपने सेल्फ ही ज्यादा होते थे। लैंडस्केप भी करते थे पहले वाटर कलर में करते थे फिर बाद में ऑयल में करने लगे। एडवर्ड पोस्ट ने मुझसे बड़े पोर्टेड बनवाएं अपने प्रेसिडेंट वगैरह के, हर एक के तीन-तीन सौ देते थे। मैं तो उस वक्त राजा बन गया था।

एडिटर साहब एक बार हमारे स्टूडियो में आये और बोले कि आप हमको ज्वाइन कर लो।

मैं जरा असमंजस में था, मैंने कहा कि कमर्सियल आर्ट तो मैंने कभी किया नहीं है मेरे को मालूम ही नहीं है अब अगर आप मुझसे ए. बी. भी लिखवाओगे तो मैं तो लिख ही नहीं सकता मुझे बिल्कुल भी आइडिया नहीं है। उन्होंने कहा नहीं-नहीं आजकल एबीसी कोई नहीं लिखता। मैं तो बस यह कह रहा हूं कि जैसे आप पेंटिंग में कंपोजीशन करते हो वैसे ही वहां पर पेज पर कम्पोजिशन कर देना। मैं कोशिक साहब से मिलके इस ऑफर के बारे में बताया और कहा कि वे मुझे सैलरी तकरीबन पौने सात सौ रुपए देंगे जबकि त्रिवेणी में मैं ढाई सौ रूपए लिया करता था। कौशिक साहब ने सलाह दी की नंद तुम ज्वाइन कर लो पर ऐसे सोचो कि जैसे तुम्हारी पेमेंट ढाई सौ ही है, यह पैसे तुम बैंक में डालते जाओ, 2 साल बाद जब तुम्हारे पास एक अमाउंट होगा तुम फ्रीलांसर बन जाना और फिर जो तुम चाहते हो कि मैं पेंटिंग करूं वो कर पाओगे। मैंने त्रिवेणी छोड़ दिया। कलाकार नन्द कात्याल अपनी बात बड़ी बेबाकी से रखते थे। दिल्ली शिल्पी चक्र से सम्बंधित कुछ महत्त्वपूर्ण यादों के बाबत उनका कहना था कि पार्टीशन के समय जो आर्टिस्ट आए हुए थे सभी के पास पैसे कम होते थे, इन्होंने ही मिलके शिल्पी चक्र गैलरी बनाई थी जिसमें सतीश गुजराल, सान्याल साहब, रामकुमार, पी. एन. मांगो, कंवल कृष्णा आदि थे लेकिन धीरे-धीरे ये सब अपने-अपने काम में बिजी होते चले गए। ये लोग यहां-वहां हट गए और इस गैलरी को यंगर को सौंप दिए और उन्होंने कहा कि यह सब आप लोग मैनेज करें। हम लोग उससे जुड़ गए हालांकि हम लोग भी नौकरी में थे फिर भी जुड़े रहे और यह हमारे लिए एक मीटिंग ग्राउंड हो गई वहां हम लोग मिलते थे आपस में बात करते थे और एग्जिबिशन भी करते थे। उस पीरियड में कोई आर्टिस्ट बड़ौदा से आ रहा हैं कोई कोलकाता से, तो कोई मद्रास से दिल्ली के भी आर्टिस्ट आते थे। गैलरी की वजह से यहां आये कलाकारों के बीच एक पारिवारिक माहौल सा बन गया था। टेक्निक्स तथा विचारों आदि का आदान-प्रदान भी होता रहता था। कलाकृति साभार गूगल से है। नन्द कात्याल जी अब हम सभी के बीच नहीं हैं।

– क्रमश:

नृत्य

अनुपमा अनुश्री

लेखक भोपाल निवासी साहित्यकार हैं।

जीवन को समृद्ध करने वाली महत्वपूर्ण कला

हवाओं की ताल पर बूंदों की पाजेब झनकने लगी और कुदरत बन गई नृत्य शाला। दिल में उगी कोई खुशी और कदम थिरकने लगे। रंजोगम का हुआ गुमां या भक्ति भाव में लीन मन का जहाँ ,भाव- भंगिमा हो गई नृत्यनुमा। मन के भाव और ऊर्जा की ,लय और गति के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति नृत्य हैं। यानी मन की धरातल पर उगी हुई भावनाओं की यह गति जब अति मुखर हो जाती है, नृत्य का रूप धारण कर लेती है। ऊर्जा का यही संग्रहण, प्रक्षेपण, गति, संरक्षण, ग्रह -नक्षत्र, तारामंडल , ब्रह्मांड सहित सभी चर -अचर को नृत्यशील सा बनाए हुए है। हम कह सकते हैं कि देव-दानव , मानव ,पशु - पक्षी सभी को नृत्य प्रिय है। पौराणिक किस्सा है भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर अपने मनमोहक सौंदर्य पूर्ण नृत्य से आकर्षित करके भस्मासुर का वध किया। सुंदर नृत्य की तुलना हम मोर के नृत्य से करते हैं। इस तरह सभी गति में हैं अविराम - अभिराम।

मानव सभ्यता के शुरुआती दिनों से ही नृत्य अभिन्न अंग रहा है । प्राचीन पाषाणों पर उत्कीर्ण नृत्य भंगिमाएँ इसका प्रमाण हैं। नृत्य जुड़ा है शिव नटराज से शाँति और तांडव में और रास/ लास्य नृत्य सौंदर्य व प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जहाँ नाग के फन पर नृत्य का अंदाज कृष्ण ने दिखाए। भारत में नृत्य कला अत्यंत प्राचीन है । वेद और पुराणों , संस्कृत साहित्य में और प्रामाणिक भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में नृत्य कला का बेहतरीन उल्लेख मिलता है।

जब मनुष्य गति को अपने अंदर के भावों से, गीत और संगीत का आलंबन लेकर जोड़ देता है तो बाह्य रूप में विभिन्न नृत्य रूप , डांस फॉर्म्स में प्रकट होने लगते हैं। यही रचनात्मकता अलग-अलग फॉर्मेट के नृत्य रूपों में व्यवस्थित और अनुशासित तरीके से प्रदर्शित होने लगती है । हम कह सकते हैं कि प्रकारांतर में यह ध्यान का एक अंश है जब शरीर की सारी इंद्रियाँ सम्मिलित रूप में उस क्षण पर केंद्रित हो जाती है और और नर्तक वर्तमान को जीता हुआ आनंदित रहता है।

अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाने के पीछे उद्देश्य यही है कि जीवन का यह अभिन्न अंग नृत्य, जो जीवन का उत्सव है, उसे ग्लोबल मान्यता दी जाए और प्रोत्साहित किया जाए। यूनेस्को की सहयोगी संस्था अंतरराष्ट्रीय थिएटर इंस्टीट्यूट और उसकी सहयोगी संस्था अंतरराष्ट्रीय डांस काउंसलिंग द्वारा 29 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस घोषित किया गया जो फादर ऑफ बैले जिन जॉर्ज नोवेरे का जन्म दिवस है। नृत्य उम्र, जाति, लिंग, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि से परे , सभी के लिए, सभी के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली मनमोहन कला है। नृत्य को जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बनाने और उसे समृद्ध, विकसित ,प्रचारित करने हेतु यह प्रस्ताव रखा गया । शास्त्रीय, लोक नृत्य, आधुनिक और प्रयोगवादी नृत्य शैली में प्रस्तुत नृत्य की उत्पत्ति , परंपरा व इतिहास , शैलियाँ, वेशभूषा, साज- श्रृँगार को लेकर शिक्षण और जागरूकता इसका उद्देश्य रहा । नृत्य एक सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में जन- मन में तीज -त्यौहार, उत्सव ,शादी- विवाह, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन व समारोहों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। नृत्य लोक जीवन संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है ।

हमारे देश में जहाँ क्लासिकल नृत्य में सर्वाधिक प्राचीन भरतनाट्यम के साथ कत्थक ,कुचिपुड़ी ,कथकली, ओडिसी, मणिपुरी ,संत्रीय , मोहिनीअट्टम आदि प्रमुख नृत्य शैलियाँ हैं वही आधुनिक नृत्य भी। पश्चिमी नृत्य शैलियाँ भी दिखाई पड़ती हैं। नृत्य का भी वैश्वीकरण हो चुका है।

भारतीय संस्कृति , रीति रिवाज,पौराणिक आख्यान, कथाओं , गीतों पर विभिन्न भावों व लयात्मकता के साथ नेत्र व अंग संचालन, संकेतों , मुद्राओं, विशेष पद संचालन, साज श्रृँगार , वेशभूषा, वादन और गायन के सुंदर सम्मिलन से ये शास्त्रीय नृत्य अभिभूत करते हैं ।भारत के सभी राज्यों में लोक नृत्य बहुत प्रचलित हैं ,जो लोक भाषा ,रहन-सहन, रीति रिवाजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आँचलिक परिवेश में नृत्य लोकजीवन में आनंद और मधुरता, उत्सव , पारस्परिक मेलजोल और एकजुटता दिखाता है । भांगड़ा ,गिद्दा, घूमर, झूमर, छऊ, कालबेलिया, बिहु, ,कर्मा, भगोरिया,राउत, ,लेजम, लावनी, तेरह ताली , कठपुतली, नौटंकी,राउफ, कोली , डाँडिया ,गरबा, यक्षागान, मुखौटा, पांडव नृत्य आदि सुंदर नृत्य कलाओं की लंबी फेहरिस्त है।

वहीं भारतीय संस्कृति में मंदिरों में भी नृत्य की परंपरा रही है। भारतीय सिनेमा यानी बॉलीवुड का अभिन्न हिस्सा है नृत्य और गीत- संगीत, वहीं देश में सभी राज्यों में नृत्य - संगीत महोत्सव आयोजित किए जाते हैं। हर प्रकार के नृत्य को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी और केंद्र बनाए गए हैं।

विदेशों में पारंपरिक नृत्य शैली के साथ-साथ आधुनिक नृत्य शैलियाँ भी निरंतर विकसित हो रही हैं , जैसे क्लासिकल व आधुनिक बैले , ट्विस्ट, हिप - हॉप, जैज ,टैप, रॉक, स्विंग ,बेली डांस, साल्सा, कंट्री लाइन डांसिंग , बालरूम, कान्ट्रा, आधुनिक भावना आधारित नृत्य, कंटेंपरेरी, फ्रीस्टाइल प्रमुख हैं। अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस पर विश्व के सभी देशों से नर्तक ,कोरियोग्राफर्स, नृत्य से जुड़े हुए सभी पेशेवर , प्रोफेशनल्स,

नृत्य मंडलियों को एक ही स्थान पर, डांस फ्लोर पर एकत्रित कर ग्रूविंग , डांसिंग का खूबसूरत समाँ बनाया जाता है। विभिन्न नृत्य रूप, डांस फॉर्म्स का प्रदर्शन किया जाता है। हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस की विशेष थीम होती है जो सभी को डाँस की ओर प्रेरित करती है । शाँति और सहयोग, आनंद की भावना में वृद्धि करने हेतु निर्धारित की जाती है । विश्व के सभी डांस फॉर्म्स को एंजॉय करने और प्रोत्साहित करने हेतु अंतर्राष्ट्रीय नृत्य दिवस को माध्यम बनाकर सभी जगह नृत्य आयोजन किए जाते हैं।

कला अपने मनोभावों को प्रदर्शित करने का खूबसूरत माध्यम है। कला नित नवाचार के साथ जीवन के विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करती हुई उसे रचनात्मक और सुरुचि पूर्ण बनाती है । मानव की चेतना से जुड़ी है कला, जितनी उच्च चेतना उतनी उत्कृष्टता ,गरिमा , कुशलता उस कला में दिखाई पड़ती है। साहित्य हो,या नृत्य कला चैतन्यता और विद्वत्ता ही उसे निखार कर सुंदर स्वरूप प्रदान करती है। जिसका दूरगामी समाज हित में बेहतर परिणाम होता है। नृत्यकला जब अपनी गरिमा और उत्कृष्टता के साथ, सुरुचि पूर्ण वेशभूषा में संपूर्ण सौंदर्य को

आत्मसात करते हुए प्रदर्शित होती है, आत्मिक सुकून प्रदान करती है और जादुई प्रभाव डालकर अपनी ऊँचाइयों पर होती है । वहीं निम्न चेतना के स्तर पर आइटम सोंग्स जैसे नृत्य भी होते हैं जो नृत्य कला की दृष्टि से, वेशभूषा , मर्यादा की दृष्टि से ,भाषाई आधार पर सौंदर्य पूर्ण और गरिमा युक्त नहीं होते। बात वही है कि सामाजिक चेतना का स्तर क्या है! अगर इस तरह की स्तरहीनता कला में आ जाती है तो हमें जागरूक और सजग हो जाना चाहिए ।

कला में विद्रूपता, अश्लीलता, अभद्रता हमारी ही व्यक्तिगत कमजोरी और चैतन्यता के निम्न स्तर को दिखाती है। कला रहित जीवन बेजार , संवेदनहीन ,रुखा , निष्क्रिय होता है। शुद्ध आनंद की प्राप्ति के लिए कला की गरिमा और उसकी उत्कृष्टता सर्वोपरि है।

कला की इस सुंदर विधा नृत्य के कई लाभ हैं। शारीरिक और मानसिक फिटनेस, संतुलन तो प्रमुख है , वहीं क्रिएटिविटी, समावेशिता, नृत्य कौशल , आनंद,सांस्कृतिक आदान-प्रदान भी महत्वपूर्ण है। नृत्य नर्तक और दर्शकों दोनों के लिए एंडोर्फिन का भंडार है यानी खुशी का बेहतरीन स्रोत है। नृत्य जीवन को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान निभाता है।

समीक्षा की यह शब्दावली 'इथिकल' नहीं है जनाब

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

नेटफ्लिक्स पर रिलीज़ सिद्धार्थ-ममता आनन्द की फिल्म -' ज्वेल थीफ - द हाइस्टबिगिंस ' के बारे में कुछ लिखूँ उसके पहले एक राष्टीय हिन्दी दैनिक में छपी समीक्षा पर एक तल्ख टिप्पणी करना चाहूँगा जिसमें समीक्षक ने बेहद झुँझलाये अन्दाज़ में फिल्म को - करोड़ों की लागत से बनी दो कौड़ी की फिल्म कहा है । समीक्षा की हर समीक्षक की अपनी एक शैली ,अपनी शब्दावली होती है मगर यूँ फिल्म को दो कौड़ी की बताना इथिकल शब्दावली नहीं है । समीक्षक ने झुँझलाहट में यह तक लिखा है कि एक खराब फिल्म बनाने के लिए क्या क्या जरूरी होता है, वह सब एक दर्शक निर्माता सिद्धार्थ आनंद की नेटफ्लिक्स पर पहुंची इस फिल्म को देखकर सीख सकता है । फिल्म देखकर आप भले ही तथ्यगत सहमत हों मगर समीक्षा की यह भाषा उस सिरे से भी इथिकल नहीं है ज़नाब ।

पिछले साल नेटफ्लिक्स पर नीरज पाण्डेय द्वारा द निर्देशित फिल्म सिकन्दर का मुकद्दर आई थी जो हीरे की लूट पर थी। अब बतौर निर्माता सिद्धांत आनंद फिल्म ज्वेल थीफ- द हाइस्ट बिगिन्स लेकर आए हैं। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि फिल्म लूट को लेकर है और कहानी आगे जाएगी, लेकिन क्या यह लूट इतनी दिलचस्प बन पाई है कि उसे आगे बढ़ाने के बारे में सोचा जाए ? हीरों की लूट को लेकर यह कहानी मूलत हीरे की चोरी की योजना बनाने और पुलिस द्वारा लुटेरे को पकड़ने पर आधारित होती है। इस सफर में कई टिवस्ट और टर्न हैं। चोर और पुलिस के बीच चूहे बिल्ली जैसा खेल तभी रोमांचक होता है जब आप कयास लगाते रहें कि कौन जीतेगा और अगले पल में क्या होगा । अफसोस यह फिल्म इन मुद्दों पर खरी नहीं उतरती है। फिल्म को बुडापेस्ट, मुम्बई से लेकर इस्ताम्बुल ले जाया गया है लेकिन कहानी में कोई ताजगी नहीं है।

कहानी मुम्बई की है । राजन औलख कीमती और दुर्लभ पेंटिंग्स का संग्रहकर्ता है मगर वो अण्डरवर्ल्ड से भी जुड़ा है । गैंगस्टर और कीमती पेंटिंग्स का व्यापार करने वाला राजन एक सख्त डॉन है और किसी को भी आसानी से माफ नहीं करता है । कहानी में पहला मोड़ तब आता है जब दक्षिण अफ्रीका से एक कीमती हीरा मुम्बई में प्रदर्शनी के लिए लाया जा रहा होता है। राजन उसे हथियाने के लिए बुडापेस्ट में रह रहे रेहान राय (सैफ अली खान) को बुलाता है। रेहान को उसके पिता को मारने की धमकी दी जाती है। इस वजह से परिवार से दूर होने के बावजूद रेहान हीरा चोरी करने को राजी होता है। उसकी मुलाकात राजन की पत्नी फराह (निकिता दत्ता) से होती है। राजन का फराह साथ व्यवहार अच्छा नहीं है। ऐसे में रेहान के साथ फराह की नजदीकियां बढ़ती हैं। हीरो की चोरी को लेकर रेहान के पीछे पुलिस अधिकारी विक्रम पटेल बने कुणाल कपूर भी है । हीरा चुराने की रेहान की पहली कोशिश नाकाम होती है क्या वह दोबारा उसे लूटने में सफल रहेगा इस बात को लेकर सस्पेंस बनाया गया है ।

निर्देशक कुकी गुलाटी और रॉबी ग्रेवाल ने इस अति नाटकीय कथानक को रोचक अन्दाज़ मं आगे बढ़ाया है और फिल्म कै एक क्राइम थ्रिलर के तौर पर प्रस्तुत किया है । यह फिल्म जहाँ क्लासिक हाइस्ट फिल्मों की कसौटी पर खरी उतरती है, वहीं रोमांच को भी बढ़ाती है, क्योंकि यहां डबल-क्रॉस का तनाव भरा खेल भी है। हम सभी ने छोटे-बड़े पर्दे पर हाइस्ट यानी डकैती की कई ऐसी फिल्में

और वेबसिरीज देखी हैं। ऐसे में कहानी एक चिर-परिचित प्लॉट के साथ शुरू होती है। एक अभेद्य तिजोरी है, जिसमें सेंध लगाना है। लेकिन डायरेक्टर जोड़ी ने इसमें एक असहाय प्रेम का एंगल भी रखा है, जिस कारण एक शतरंज के सारे बिसात बिखरने लगते हैं। हालांकि, कहानी के कुछ सिरे अनसुलझे ही छोड़ दिए गए हैं। ।

फिल्म देखते हुए लगता है कि स्टाइलिंग, मेकअप, कॉस्टयूम पर बहुत ध्यान दिया गया है, लेकिन कहानी की ओर उतना नहीं। लूट की कहानी में अगर रोमांच और कौतूहल न हो तो बेमजा होती है। यहाँ पर लूट की योजना बनानी हो या लूट करना हो ,दोनों को लेकर न आप चौंकते हैं न उसमें कोई नयापन दिखता है। फिल्म में पुराने घिसे-पिटे फॉर्मूले दिखते हैं।कुल मिलाकर, शानदार एक्टिंग और थ्रिल पैदा करने वाले स्क्रीनप्ले के बूते यह एक शानदार हाइस्ट मूवी में गिनी जा सकती है। यह एक एंटरटेनिंग फिल्म है। दो दिग्गज एक्टर्स के बीच का टकराव, एक करिश्माई ठग और मजेदार ट्विस्ट आपको पूरी तरह से बाँधे रखने का दम रखती है ।

सुखदेव पांसे बने प्रदेश संगठन प्रभारी

कांग्रेस हाईकमान के फैसले से कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

बैतूल। पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सुखदेव पांसे को मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी का संगठन प्रभारी बनाए जाने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने खुशी जाहिर करते हुए पार्टी के उच्च नेतृत्व का आभार व्यक्त किया और जिले भर से श्री पांसे को बधाई दी। बधाई देने वालों में प्रमुख रूप से जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, पूर्व विधायक निलय डागा, धरमूसिंह सिरसाम, ब्रह्मा भलावी, शांतिलाल तातेड, प्रदेश महामंत्री रामू टेकाम, प्रदेश सचिव समीर खान, प्रदेश प्रतिनिधि नवनीत मालवीय, मनोज मालवे, जिला सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष अरुण गोठी,डा. राजेंद्र देशमुख, राजेंद्र जायसवाल, नगर पालिका अध्यक्ष अमला नितिन गाडरे, अनुराग मिश्रा, आदि शामिल हैं।

ट्रक और डंपर के बीच भिड़ंत, चालक की मौत

बैतूल। बैतूल-भोपाल नेशनल हाईवे पर शुक्रवार रात शाहपुर के पास डंपर और ट्रक की टक्कर हो गई। इस हादसे में राजस्थान के ट्रक चालक की मौत हो गई। मृतक की पहचान रमेश विश्नोई (29) के रूप में हुई। घटना उस समय हुई जब भोपाल से नागपुर जा रहा ट्रक, डंपर के पीछे चल रहा था। डंपर का

टायर अचानक फट गया। डंपर चालक ने तुरंत ब्रेक लगा दिए। पीछे से आ रहे ट्रक के चालक रमेश विश्नोई ने डंपर से टक्कर टालने की कोशिश की, लेकिन नहीं बचा पाए। हादसे में गंभीर रूप से घायल रमेश को पहले शाहपुर अस्पताल ले जाया गया। वहां से उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया। रमेश ट्रक पर अकेले थे। उनकी पहचान जेब में मिले मोबाइल से हुई। पुलिस ने परिजनों को सूचना दे दी है। रमेश रिलायंस कंपनी के लिए ट्रक चलाते थे।

मंडी हम्माल ने लगाई फांसी

बैतूल। बैतूल के भवानी मोहल्ला में शुक्रवार शाम को गुड मंडी में कार्यरत एक हम्माल ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह लंबे समय से बीमारी से जूझ रहा थे। बैतूल बाजार पुलिस के एसआई संजय कलम ने बताया कि मृतक विजय परिहार (52) अपने घर में अकेले थे, जब उन्होंने यह कदम उठाया। पत्नी और बच्चों के मजदूरी से घर लौटने पर शव फांसी पर लटका मिला, जिसके बाद पड़ोसियों और पुलिस को सूचना दी गई। पड़ोसियों के अनुसार, विजय लंबे समय से सिरदर्द की समस्या से परेशान थे। नींद न आने और चक्कर आने की बीमारी से भी जूझ रहे थे। वे गुड मंडी में हमाली का काम करते थे। पुलिस ने शव को फांसी से उतरवाकर जिला अस्पताल भिजवाया, जहां शनिवार को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। विजय की दो बेटियां हैं, जिनमें से एक की शादी हो चुकी है।

झूले से गिरा 2 साल का बच्चा, हालत नाजुक

बैतूल। मुलताई थाना क्षेत्र के ग्राम सांडिया में शनिवार को दो वर्षीय बालक झूले से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना उस समय हुई जब बालक पुनीत झूले में सो रहा था। नींद खुलने के बाद वह झूले में खेलने लगा। इसी दौरान वह असंतुलित होकर सिर के बल नीचे गिर गया। गिरने से उसके सिर में गंभीर चोट लग गई। बच्चे के पिता पुनेश ने बताया कि बच्चे के लिए घर पर ही रस्सी वाला झूला बनाया गया था। पिछले कई महीनो से वह आराम से झूले में सो रहा था, लेकिन आज अचानक नींद से उठकर वह खेलने लगा। वह कब झूले से गिर गिर गया, इसकी जानकारी किसी को नहीं है। रोने की आवाज सुनकर वे तुरंत मौके पर पहुंचे। बच्चे के सिर से खून बह रहा था। परिवार उसे तत्काल मुलताई के सरकारी अस्पताल ले गया।

जगद्गुरु आदि शंकराचार्य की जयंती मनाई गई

धार। आदिगुरु शंकराचार्य जी की जयंती श्री नित्यानंद आश्रम में भजन- पूजन के साथ मनाई गई। कार्यक्रम संयोजक सचिन दवे ने श्री शंकराचार्य जी द्वारा वैदिक धर्म के जन जागरण एवं अद्वैतवाद एवं शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित ज्योर्तिमठ, शारदा मठ एवं गोवर्धन मठ के संबंध में विस्तृत रूप से बताया।

शंकराचार्य जी की तस्वीर का पूजन संत श्री सुरेशानंद जी ने किया । पत्रकार राजेश शर्मा एवं डॉक्टर तरुण जोशी जी द्वारा पूजन किया गया। पूजन के बाद सभी उपस्थित बंधुओं द्वारा भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया एवं प्रसाद वितरित की गई। जानकारी अभिनव चतुर्वेदी द्वारा दी गई।

नपा ने पीडब्ल्यूडी से हैंडओवर ली सडक़, न बन पा रही और न सुधर रही

सडक़ पर गड्ढों और उड़ती धूल से परेशान नागरिक

बैतूल। नगरपालिका ने शहर की सडक़ो को पीडब्ल्यूडी से हैंडओवर तो ले लिया, लेकिन अब बजट की कमी के कारण नगरपालिका सडक़े नहीं बना पा रही है। यहां तक कि सडकों के गड्ढे तक नहीं भरे जा रहे है। जिससे वाहन चालकों को परेशान होना पड़ रहा है। ऊपर से लोगों को गड्ढों और धूल का सामना करना पड़ रहा है। रेलवे स्टेशन के बाहर सडक़ पर धूल उड़ती रहती है, केन्द्रीय विद्यालय, रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड के साथ गंज बाजार जैसे भीड़-भाड़ वाले व्यस्त क्षेत्र इस सडक़ पर हैं। इसके बावजूद यहां पर नपा पैचवर्क भी नहीं कर रही है। दरअसल नगरपालिका ने एक साल पहले पीडब्ल्यूडी से रेलवे स्टेशन के सामने की सडक़ 5 साल के लिए हैंडओवर ले ली थी। पांच सालों तक नपा के क्षेत्राधिकार में काम करने की अनुमति देते हुए पीडब्ल्यूडी ने नपा को सडक़ दी है। अब पीडब्ल्यूडी ने काम करना बंद कर दिया है। यहां पर केंद्रीय विद्यालय के सामने सडक़ पर गिट्टियां बिखरी पड़ी हैं, लेकिन सुधार नहीं हो रहा है। यहां पर नपा ने पैचवर्क भी नहीं किया है।

2.85 किलोमीटर लंबी सडक़ बननी है

रेलवे स्टेशन के सामने 2.85 किलोमीटर की लंबाई सडक़ बनना था। इसके बीच में लाइट्स भी लगने थे, लेकिन बजट के अभाव में यह सब धरा का धरा रह गया। इस सडक़ पर अब लोगों की परेशानी बढ़ गई है। सीसी सडक़ नहीं बनी है, डामर सडक़ पर गिट्टियां बिखरी पड़ी हैं। खासकर केन्द्रीय विद्यालय के भवन के सामने और रेलवे स्टेशन के सामने धूल बहुत ज्यादा उड़ती है। सडक़ चौड़ी नहीं होने से यहां पर ट्रैफिक जाम भी लगते रहते हैं। आए दिन इसी तरह की स्थिति यहां पर बन रही है। इसके अलावा रेलवे स्टेशन के सामने से करबला घाट के समीप तक सडक़ के बीच में डिवाइडर वाली 18 मीटर चौड़ी सीसी सडक़ बनाई जानी है। वर्तमान में सडक़ की चौड़ाई 7.5 मीटर है। चौड़ाई को बढ़ाने के साथ बीच में डिवाइडर भी बनाए जाने हैं।

नगरीय प्रशासन से नहीं मिला बजट

नगरपालिका ने शहर की सडक़ों को भव्य और सुंदर बनाने का सपना लेकर नगरीय प्रशासन की बैठक में बजट मांगा था, लेकिन नगरीय प्रशासन विभाग ने बजट देने से मना कर दिया है। इस कारण यह सडक़ अब बन नहीं पाएगी। हालांकि यह भी कहा जा रहा है कि अगले बजट में दिलवाने का प्रयास किया जाएगा। केन्द्र सरकार से बजट नहीं मिलने की वजह से भी सडक़ों का काम रूका हुआ है। आबकारी से गंज तक जाने वाली सडक़ की हालत बेहद खराब हो गई है। गिट्टी निकल आई है। इस सडक़ को अब मरम्मत की दरकार है। लेकिन बजट की वजह से सडक़ की मरम्मत तक नहीं हो पा रही है।

शहर की कई सडक़ों की हालत हो गई खस्ताहाल

शहर की मुख्य सडक़ो की ही बात करे तो कई सडक़े इतनी बेकार हो गई है कि उन सडक़ों पर जगह-जगह गड्ढे नजर आते है। कहीं डामर उखड़ गया है तो कहीं पर सडक़ की गिट्टी निकल रही है। कॉलेज चौक से गंज वाली सडक़ तो कई जगहों पर अंदर दब गई है। जिस पर वाहन चलाते समय वाहन हिचकोले खाते है। चौपाटी से गंज वाला मार्ग पर भी कई जगह डामर और गिट्टी निकल गई है। इसके अलावा वार्डो में भी सडक़ों की हालत कुछ अच्छी नहीं है। सडक़ खराब होने से लोगों को रोजाना परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा दिक्कते रात्रि में होती है, जब सडक़ के गड्ढे नजर नहीं आते है और वाहन अचानक गड्ढों में जाने से चालक अनबैलेंस होकर गिर जाते है और उन्हें लंबे समय तक इसका दर्द झेलना पड़ता है।

बस स्टैंड से लल्ली चौक तक सडक़ निर्माण के लिए लगाए बैरिकेड्स, वाहन चालक हो रहे परेशान

बैतूल। कोठीबाजार क्षेत्र में बस स्टैंड से लल्ली चौक तक बन रही सडक ने वाहन चालकों और वँहा के दुकानदारों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं क्योंकि बस स्टैंड से लल्ली चौक तक सडक़ के दोनों ओर बैरिकेड्स लगाकर रास्ता बंद किया गया है। सडक़ पर कभी आंशिक, तो कभी पूरी तरह से आवाजाही बंद करके रखी गई है। रास्ता बंद होने से ग्राहक दुकानों के सामने नहीं पहुंच पा रहे, इससे वँहा के व्यापारियों

को नुकसान हो रहा है। हालात यह है कि दुपहिया वाहन चालक बैरिकेड्स के बीच से थोड़ी सी जगह से वाहन निकलने की कोशिश करते है। इसके बाद एक-एक कर कई दुपहिया वाहन चालक उसी रास्ते से निकालने लगते है। रास्ता बंद होने से वाहन चालकों ने रूट डायवर्ट वाले स्थान पर ही वाहन पार्किंग शुरू कर दी है। बस स्टैंड के एंट्रेंस वाले चौराहे के पास बड़ी संख्या में वाहन खड़े हो रहे हैं, जिससे वाहन चालकों के साथ-साथ बस स्टैंड पर आने वाली बस के चालको को भी भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गौरतलब है कि बस स्टैंड क्षेत्र में सदैव भारी भीडभाड रहती है, ऐसे में नगर पालिका एवं ट्रैफिक पुलिस द्वारा सडक़ निर्माण के दौरान उचित व्यवस्था बनाए जाने के लिए समुचित प्रबंध किया जाना चाहिए, जिससे लोगों को परेशानियों का सामना न करना पड़े।

इनका कहना है -

रेलवे स्टेशन से केन्द्रीय विद्यालय की ओर आने वाली सडक़ की डीपीआर बनाकर शासन को भेजी है। यह सडक़ टू लेन बनेगी, जिस पर बीच में डिवाइड, लाइटिंग और दोनों तरफ नालियां बनेगी। सडक़ निर्माण पर करीब 28 करोड़ 75 लाख रूपये खर्च होगे। जिसके संबंध में विगत दिनों नगरीय निकाय विभाग के चीफ सेकेक्ट्री के साथ बैठक भी हुई थी, लेकिन वित्तीय वर्ष समाप्ति के कारण राशि नहीं मिल पाई। उम्मीद है कि तीन-चार माह में राशि मिल जायेगी, जिसके बाद सडक़ निर्माण का टैंडर लगा देगे।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

पुष्य नक्षत्र पर 261 बच्चों को कराया स्वर्ण प्राशन, 31 मई को फिर होगा आयोजन

योग दिवस काउंटडाउन शुरू, स्वर्ण प्राशन के साथ आयुष विभाग ने चलाया जागरूकता अभियान

बैतूल। 3 मई को पुष्य नक्षत्र के शुभ अवसर पर जिला आयुष विभाग बैतूल द्वारा स्वर्ण प्राशन का सफल आयोजन किया गया। यह आयोजन मध्य प्रदेश शासन के आयुष संचालनालय के निर्देशों के तहत जिला कलेक्टर के मार्गदर्शन में एवं जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर के निर्देशन में संपन्न हुआ। स्वर्ण प्राशन आयुर्वेद औषधालय गर्ग कॉलोनी में 71 बच्चों को लाभ प्रदान किया गया। इस प्रकार कुल 261 बालक-बालिकाओं को स्वर्ण प्राशन का लाभ मिला। डॉ योगेश चौकीकर ने बताया कि स्वर्ण प्राशन में डाबर कंपनी का विशेष सहयोग रहा। अगली स्वर्ण प्राशन तिथि 31 मई को पुनः पुष्य नक्षत्र के दिन निर्धारित की गई है।

कार्यक्रम शासकीय आयुर्वेद जिला चिकित्सालय टिकारी एवं शासकीय आयुर्वेद औषधालय गर्ग कॉलोनी में आयोजित किया गया।

बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर योगेश चौकीकर ने जानकारी देते हुए बताया कि स्वर्ण प्राशन बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है, जिससे बदलते मौसम में बच्चों को मौसमी बीमारियों से बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि स्वर्ण प्राशन एक विशिष्ट आयुर्वेदिक प्रक्रिया है, जिसमें स्वर्ण भस्म को मधु, घृत एवं अन्य आवश्यक औषधियों के साथ मिलाकर सिद्ध किया जाता है। यह मिश्रण बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास में भी लाभकारी होता है।

स्वर्ण प्राशन कार्यक्रम के दौरान शासकीय आयुर्वेद जिला चिकित्सालय टिकारी में 190 बच्चों को और शासकीय

योग दिवस के लिए 50 दिवसीय काउंटडाउन की शुरुआत- इसी दिन से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए 50 दिवसीय काउंटडाउन की शुरुआत भी की गई। इस अवसर पर आयुष विभाग की सभी संस्थाओं द्वारा जिलेभर में योग के प्रचार-प्रसार की गतिविधियां आयोजित की गईं। सभी संस्था प्रभारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में पंचायत परिसर, ग्राम चौपाल, आंगनबाड़ी केंद्रों और स्कूलों में योगाभ्यास करवाया। साथ ही लोगों को योग को नियमित रूप से जीवन में शामिल करने की प्रेरणा दी गई।

आयुष विभाग के इस संयुक्त अभियान से स्वर्ण प्राशन और योग दोनों के महत्व को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बेहतर ढंग से प्रचारित किया गया। आने वाले दिनों में भी योग दिवस की तैयारियों को लेकर इसी प्रकार का जनजागरूकता अभियान जारी रहेगा।

जन अभियान परिषद ने मंडदेव धाम में चलाया स्वच्छता अभियान

जल स्रोतों तथा झरनों की साफ-सफाई कर दिया जल संरक्षण का संदेश

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है। अभियान के अंतर्गत मंडदेव धाम आषाढ़ी में जन अभियान परिषद द्वारा स्वच्छता और जन जागरूकता अभियान चलाया गया। उल्लेखनीय है कि यह स्थल आदिवासी समुदाय की आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां गंगा सप्तमी के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु भगवान महादेव की पूजा-अर्चना के लिए आते हैं। अभियान के दौरान चिचोली ब्लॉक में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्र-छात्रा एवं परामर्शदाताओं, नवांकुर संस्था के सदस्यों द्वारा मठदेव मंदिर परिसर, जल स्रोतों तथा झरनों की साफ-सफाई की गई। इसके अलावा पहाड़ी झरनों से बने स्टॉप डेम की भी सफाई की गई, जिससे जल संरक्षण को बढ़ावा मिले। जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी एवं ब्लॉक समन्वयक श्री राजू मांडवे ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए जल संरक्षण के उपायों

पर संगोष्ठी के माध्यम से जानकारी दी। जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया कि वर्षा जल संचयन, तालाबों का गहरीकरण एवं सोखते गड्ढों जैसे नवाचारों से जल संकट की स्थिति को दूर किया जा सकता है। उन्होंने इस अभियान को गांव-गांव एवं वार्ड स्तर तक पहुंचाने का आह्वान किया। ब्लॉक समन्वयक श्री मांडवे ने श्रमदान करते हुए युवाओं को जन-सहयोग से ऐसे जनजागरण अभियानों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

बैतूल जिला बना जल संरक्षण में अग्रणी, कूप रिचार्ज में प्रदेश में प्रथम स्थान

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन द्वारा 30 मार्च से 30 जून 2025 तक संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत बैतूल जिले ने 3800 कूप रिचार्ज के लक्ष्य के विरुद्ध 2777 कूप रिचार्ज का निर्माण प्रारम्भ कर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि कलेक्टर श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन के कुशल मार्गदर्शन और समन्वित प्रयासों का परिणाम है। अभियान के तहत जिले में जल स्रोतों के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में सैकड़ों गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें कूप रिचार्ज, अमृत सरोवर , खेत

तलवार सोख्ता गड्ढा निर्माण, जल संरचनाओं की सफाई, जीर्णोद्धार, जन जागरूकता रैली, और जल सम्मेलन शामिल हैं। ग्रामीण स्तर पर जनभागीदारी से इन गतिविधियों को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। यह उपलब्धि जिले के समर्पित प्रशासनिक अधिकारियों, पंचायत प्रतिनिधियों एवं नागरिकों के सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है।

कूप रिचार्ज से बदलेगी तस्वीर- मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान केवल एक शासकीय कार्यक्रम नहीं, बल्कि जन-आंदोलन बन गया। सूखते कुएँ, गिरता जलस्तर और जल संकट की आहट के प्रति प्रशासन ने गांव-गांव जाकर जल संरक्षण की अलख जगाई है। कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी और सीईओ श्री अक्षत जैन के नेतृत्व में जिले में सैकड़ों कुओं का रिचार्ज कराया जा रहा है। इस कार्य में पंचायतों, स्व-सहायता समूहों और स्वयंसेवियों ने भागीदारी निभा रहे है।

जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय में निशुल्क खेल प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

सुबह सवेरे सोहागपुर। प्रदेश शासन के निर्देश अनुसार खेल एवं युवा कल्याण विभाग के मार्गदर्शन में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी सोहागपुर विकासखंड में निशुल्क खेल प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय परिसर में हुआ । इस शिविर में वालीबाल, हॉकी, बैडमिंटन, एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन होगा। इसी क्रम में खेल युवा कल्याण विभाग व शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम कामती रंगपुर में भी फुटबॉल के साथ अन्य प्रतियोगिताओं का शुभारंभ किया गया । इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष अश्वनी सरोज, पार्षद रवि उइके , ब्लॉक खेल अधिकारी हेमराजसिंह नागा, ब्लॉक समन्वयक चंदा मिश्रा आदि उपस्थित थे।

ब्लॉक खेल अधिकारी हेमराजसिंह नागा ने बताया कि खेलों में पोषण एवं डाइट का क्या महत्व एवं स्वस्थ शरीर ही सबसे बड़ा धन है ।इस अवसर पर अतिथियों ने कहा कि मध्यप्रदेश के युवाओं के शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास की दिशा में एक सार्थक पहल है। यह शिविर केवल खेल सिखाने का माध्यम नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को एक सजग, अनुशासित और सक्षम नागरिक के रूप में तैयार करने का अवसर है।

कांमती रंगपुर में शासकीय पीएम श्री उच्चतर माध्यमिक शाला खेल मैदान के शिविर में प्राचार्य श्रीमती लक्ष्मी ककोड़िया ,सरपंच श्रीमती अहिल्याबाई ,सचिव हरिराम मौर्य के आतिथ्य में शिविर का शुभारंभ किया । प्रतियोगिता के कोच आशु राय महक सराठे, शिवम दुबे अशाली छ्यबड़िया ,कामती रंगपुर में सुमित डोंगरे, हर्षना वाडिवा छात्र छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।खेल प्रशिक्षण शिविर 1 से 31 मई तक चलेगा । प्रशिक्षण का समय प्रातः 6 से प्रातः 8 तक एवं शाम को 5-30 से 7 बजे शाम तक रहेगा ।

दशनामी गोस्वामी समाज ने आदि शंकराचार्य की प्रभावी शोभायात्रा निकाली

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज पुराने थाने के पीछे स्थित माता महाकाली मंदिर परिसर से दशनाम गोस्वामी समाज ने आद्य गुरु शंकराचार्य की जयंती पर प्रभावी शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा में रथ में आदि शंकराचार्य स्वरूप को रथ में विराजित किया गया था। बैंड बाजों आदि की धुनें बजाई जा रही थी। सोहागपुर ही नहीं आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों के सजातीय बन्धुओं एवं महिलाओं ने अपनी सहभागिता शोभायात्रा

में निभाई। शोभायात्रा में शामिल सभी महिलाएं, पुरुष एवं बच्चे सभी पीले वस्त्र धारण किए हुए थे। सभी ने आदि शंकराचार्य चित्र के पीले गम्छे गले में पहनें हुए थे। शोभायात्रा महाकाली मंदिर से कन्या शाला, बिहारी चौक, कमानिया गेट, मुख्य बाजार, पलकमती नदी पुल, न्यायालय चौराहा से होकर विवेकानंद एकेडमी परिसर में विसर्जित हुई। विवेकानंद एकेडमी परिसर में सजातीय बन्धुओं ने आदि शंकराचार्य के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में भंडारे का भी आयोजन किया गया। उक्त आयोजन गिरि, पुरी, भारती, सरस्वती, आश्रम, पर्वत, सागर, अरण्य, वन, तीर्थ आद्य गुरू शंकराचार्य दशनाम गोस्वामी संगठन सोहागपुर के तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

सिनेमा के प्रभाव से कितना बदला समाज

सिनेमा समाज में प्रयुक्त बहु प्रचलित शब्द है। कुछ लोग सिनेमा को कल्पना लोक समझते हैं किंतु यह पूर्ण सत्य नहीं है। जैसे लोक का अनुकीर्तन काव्य व नाटक आदि सभी विधाओं में होता है वैसे ही लोक का अनुकरण (लोक का प्रतिबिंब) सिनेमा में भी देखने को मिलता है। फिल्मों में भी लोक में परिव्याप्त सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, समस्याओं, विसंगतियों, विषमताओं, विद्रूपताओं, विरूपताओं, अंधविश्वास, कुरीतियों, रूढ़ियों, का फिल्मांकन बेहतरीन तरीके से किया जाता है जिससे सामाजिक चेतना के जागृत होने के साथ ही दर्शकों को रसानुभूति की प्राप्ति होती है।

प्रो वत्सला

सिनेमा से आनंद और प्रकारान्तर से हर्ष की प्राप्ति होती है, इसका अनुमान सिनेमा घरों से निकलने वाली भीड़ को देखकर लगाया जा सकता है। नाटक की तरह सिनेमा भी दृश्य होता है। नाटक में रंगकर्मी द्वारा किए गए अभिनय को सामाजिक अपने चक्षुओं से प्रत्यक्ष देखते हैं। जबकि, सिनेमा में कलाकारों द्वारा अभिनीत अभिनय का फिल्मांकन पर्दे पर दिखाया जाता है। सिनेमा से नाटक की भांति ही दर्शकों को आनंदानुभूति की प्राप्ति होती है। समाज में प्रसृत प्रवृत्तियों का प्रभाव साहित्य की तरह सिनेमा में भी परिलक्षित होता है। लोक की अभिरुचि के अनुसार ही निर्माता व निर्देशक कहानी का चयन कर फिल्म का निर्माण करते हैं। इस तरह सिनेमा, साहित्य और समाज का आपस में अंतःसंबंध है। समाज से अधिग्रहित सिनेमा का साहित्य विपुलकाय है।

सिनेमा केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं, बल्कि इससे सामाजिक ढांचे व परिवेश में भी बदलाव होता है। फिल्में समाज के हर वर्ग को

प्रभावित करती हैं। सिनेमा का सबसे ज्यादा प्रभाव फैशन (आधुनिक दृष्टि) पर पड़ता है। फिल्मों में कलाकार जिस तरह का परिधान धारण करते हैं, जिस प्रकार की हेयर स्टाइल और भाषा शैली व संवाद का प्रयोग करते हैं, तुरंत ही उसका प्रचलन समाज में हो जाता है। जैसे 'आनंद' फिल्म का 'बाबूमोशाय', दीवार फिल्म का 'साहब मैं फेंके हुए पैसे नहीं उठाता' शोले फिल्म का अब तेरा क्या होगा कालिया, चल धन्नो आज तेरी बसंती की इज्जत का सवाल है, हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर है आदि। युवक-युवतियों पर फिल्मों का तात्कालिक प्रभाव पूरे देश और समाज में दिखाई देता है। फैशन का पूरा दौर बदल जाता है।

फिल्मों से हमारी उत्सवधर्मिता में भी परिवर्तन हुआ। पहले तीज, त्यौहार बहुत सादगी से छोटे पैमाने पर मनाए जाते थे। पर, लोगों में बहुत ही आपसी सौहार्द्र की भावना होती थी। आज तीज-त्योहारों का आयोजन भव्यता से किया जाने लगा है जैसे हरतालिका व्रत, करवा चौथ, दीपावली, छठ पूजा आदि। अब प्रदर्शन ज्यादा हो गया है और आत्मीय भाव न्यून हो गया। विवाह संस्कार के रीति-रिवाजों में भी फिल्मों का प्रभाव अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है। फिल्मों के कारण विवाह संस्कार के रीति -रिवाजों में भी बहुत परिवर्तन हुआ है। फिल्मों के वैवाहिक कार्यक्रम की प्रभावान्विति समाज में स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। फिल्मों के अच्छे और बुरे

परिणाम दोनों ही समाज में दिखाई पड़ते हैं। हाईकोर्ट का कथन है कि फिल्म एवं टीवी सीरियल समाज में गंदगी फैला रहे हैं। वर्तमान में हाईकोर्ट का कथन अक्षरशः सत्य है।

फिल्मों के इतिहास का अवलोकन करें, तो हम देखते हैं कि पहले केवल धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक फिल्में ही बनती थी। जिसमें हमारी भारतीय संस्कृति परिलक्षित होती थी। किंतु शनैः -शनैः 20वीं शताब्दी के मध्य से फिल्मों की पटकथा में भी परिवर्तन आरंभ हुआ। सामाजिक समस्याओं और उनके उन्मूलन की सीख देने वाली फिल्में बनने लगी। इससे समाज में परिवर्तन हुआ। फिल्मों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को जन-जन तक पहुंचाया गया। क्योंकि, उस समय संचार के माध्यम समाचार पत्र, रेडियो और सिनेमा ही थे। सामाजिक चेतना जागृत करने के लिए नारी जाति से सम्बद्ध सामाजिक कुरीतियों यथा वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह ,बाल विवाह ,बेमेल विवाह, प्रेम विवाह,अन्तर्जातीय विवाह, कुंवारी माँ, दहेज प्रथा, बहु विवाह, बांझपन, अशिक्षा, विवाहेत्तर सम्बन्ध, पूर्व प्रेम संबंध, संपत्ति अधिग्रहण, प्रेमपाश में गृह-पलायन, विवाह के मध्य अमीरी-गरीबी की खाई, विवाह के बीच जाति व धर्म आदि विषयों की कहानियों पर फिल्में बनने लगी और लोगों के द्वारा सराही भी गई।

इसके अलावा समाज में व्याप्त गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, कालाबाजारी, चोरबाजारी, भिक्षावृत्ति, जातिवाद,

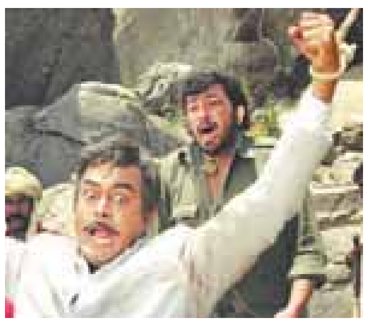

सामाजिक भेदभाव, समानता और असमानता के मुद्दों, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, देश भक्ति, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय आंदोलन, सरकार की नीतियों, वीर जननायकों, देश विभाजन के दंश, लिंग भेद, महिला सशक्तिकरण, माफिया डॉन, तस्करी आदि अनेक देश विरोधी विषयों को लेकर फिल्में बनीं। 21वीं सदी में खेल जगत,आतंकवाद (द कश्मीर फाइल, केरल स्टोरी) भारतीय सेना द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों, इतिहास के अनछुए पहलुओं न जाने कितने विषयों को लेकर सिनेमा का निर्माण किया गया। जनता को सत्य-असत्य को जानने का अवसर भी मिला।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सिनेमा समाज के वर्तमान और भूत को दर्शाता है तथा भविष्य को नयी दिशा देने में भी सहायक होता है। चलचित्र (सिनेमा) हमारे समाज का अभिन्न अंग है। फिल्मों में फिल्माए देश और समाज की चतुर्दिक स्थितियों को देखकर तत्कालीन समाज और देश की स्थिति का आकलन किया जा सकता है। पहले समाज में फिल्मों को देखना अच्छा नहीं समझा जाता था। लोग चोरी-छिपे फिल्म देखने जाते थे। किंतु, अब यह धारणा बदल गई है। फिल्मों में देश की ज्वलन्त समस्याओं को भी दिखाया जाता है और उसका समाधान भी प्रस्तुत किया जाता हैं। फिल्मों का अनुकरण समाज में सर्वाधिक किया जाता हैं। अनुकरण के द्वारा समाज और राष्ट्र की दशा और दिशा बदली जा सकती है क्योंकि मानव स्वभाव से विवेकशील और अनुकरण शील प्राणी है।

'शाहरुख़ की 'किंग' में दीपिका पादुकोण की एंट्री

शाहरुख खान की फिल्म 'किंग' में एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण लीड रोल निभाएंगी। अब इस बात की पुष्टि मूवी के डायरेक्टर ने भी कर दी। दीपिका फिल्म 'किंग' को लेकर लगातार सुर्खियों में हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो यह फिल्म जल्द ही फ्लोर पर उतरने वाली है। फिल्म की शूटिंग भी इसी साल शुरू होगी। दीपिका 'किंग' में शाहरुख खान के अपोजिट नजर आएंगी।

सिद्धार्थ आनंद ने खुद अपने ट्विटर हैंडल पर इस बात की पुष्टि कर दी, कि 'किंग' में दीपिका पादुकोण की एंट्री हो गई। उन्होंने लिखा 'अब ट्रू.' मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो दीपिका इस फिल्म में शाहरुख खान की पुरानी लवर का रोल प्ले करेंगी।

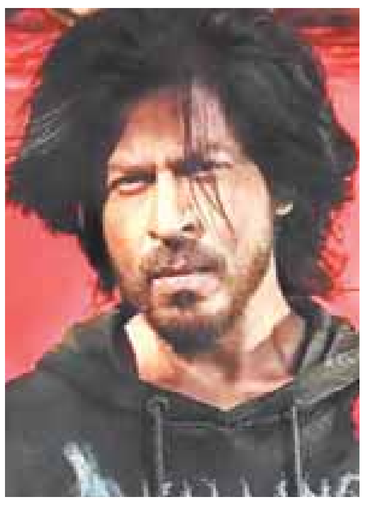

हालांकि, एक्ट्रेस ने इस रोल की पुष्टि नहीं की। वहीं खबरों में ये भी दावा किया जा रहा है कि दीपिका पादुकोण और शाहरुख खान इसी साल 18 मई से सिद्धार्थ आनंद की इस फिल्म की शूटिंग शुरू कर देंगे।

दोनों ही इस मूवी को लेकर काफी एक्साइटेड हैं। किंग' में एक्टर शाहरुख खान एक गैंगस्टर का रोल निभाएंगे तो वहीं मूवी में सुहाना खान भी मुख्य किरदार निभाएंगी। फिल्म में सुहाना शाहरुख खान की बेटी का रोल ही प्ले करेंगी। इस फिल्म में 'मुंज्या' एक्टर अभय वर्मा भी नजर आएंगे। वहीं फिल्म में एक्टर अभिषेक बच्चन भी मुख्य किरदार निभाएंगे। खबरों के मुताबिक इस फिल्म में अमिताभ नेगेटिव रोल प्ले करेंगे।

रियल बॉक्स

डरना और डराना भी एक तरह का मनोरंजन

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हमारे देश की विचित्रता में कई तरह के किस्से और कहानियां हैं। जिस तरह ईश्वर के प्रति आस्था है, उसी तरह समाज में जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, आत्मा और भूत को लेकर भी लोगों में भरोसा काफी गहरा है। इसे लेकर कई तरह के किस्से-कहानियां प्रचलित हैं। जो लोग इन पर भरोसा नहीं करते, वे भी इन्हें एकदम नहीं नकारते। क्योंकि, हर परिवार में भूत, प्रेत, चुड़ैल और आत्माओं की मौजूदगी बताने वाला कोई न कोई सदस्य जरूर होता है। आज भी यह विषय विवाद में है कि क्या भूत-प्रेत होते हैं या फिर सिर्फ भ्रम है। इन्हीं भूतों और प्रेत आत्माओं का प्रभाव फिल्मों में भी आया। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के ज़माने से भूत, प्रेत और चुड़ैल के नए-नए किस्से दिखाए जाते रहे हैं। आज जब फिल्म निर्माण की तकनीकी आधुनिक हो गई, पर हमारी फ़िल्में उससे मुक्त नहीं हुई। फर्क इतना आया कि इसमें मनोरंजन का तड़का नए अंदाज में लगने लगा। भूतों की कहानी को कभी कॉमेडी की तरह फिल्माया जाता, कभी बदले की भावना से जोड़ा जाता! कुछ कहानियों में इसमें एक जन्म से दूसरे जन्म तक प्रेम कहानी को गूंथा गया। ऐसी कहानियां कभी पुरानी नहीं पड़ी।

फिल्मों में सबसे पहले इस तरह का कथानक 1949 में कमाल अमरोही 'महल' से लाए थे। अशोक कुमार और मधुबाला की इस फिल्म में नायिका भटकती आत्मा थी। लेकिन, क्लाइमेक्स में पता चलता है कि वो कोई आत्मा नहीं, वास्तव में महिला ही थी। इसके बाद 1962 में आई 'बीस साल बाद' 1964 में आई 'वो कौन थी' और 1965 की 'भूत बंगला' में भी ऐसी ही डरावनी कहानियां थीं। खास बात यह कि ऐसी अधिकांश फिल्मों में भूत या भटकती आत्मा को असफल प्यार या बदले की भावना से जोड़ा जाता रहा। फिल्मों में भूतों की भूमिका दो तरह से दिखाई जाती रही है। एक बदला लेने वाला और दूसरा मदद करने वाले भूत! 80 और 90 के दशक में 'रामसे ब्रदर्स' ने जो फ़िल्में बनाई, वो डरावनी शक्ल और खून में सने चेहरों वाले खूनी भूतों पर केंद्रित रही। बाद में इन भूतों का अंत त्रिशूल या क्रॉस से दिखाया गया। इस बीच मल्टीस्टारर फिल्म 'जॉनी दुश्मन' आई, जिसमें संजीव कुमार ऐसे भूत बने थे, जो दुल्हन का लाल जोड़ा देखकर खतरनाक भूत में बदल जाते हैं। 2007 में प्रियदर्शन ने भी 'भूल भुलैया' में आत्मा को दिखाया। यह विषय इतना पसंद किया गया कि इसके दो सीक्वल बन गए।

फिल्मों के भूत सबका नुकसान ही करें, यह जरूरी नहीं। फ़िल्मी कथानकों में ऐसे भी भूत आए, जो सबकी मदद करते हैं। भूतनाथ, भूतनाथ रिटर्न और 'अरमान' में अमिताभ बच्चन ने ऐसे ही अच्छे भूत का किरदार निभाया, जो मददगार होते हैं। 'हैल्लो ब्रदर' में भूत बने सलमान खान अरबाज़ खान के शरीर में आकर मदद करते थे। 'चमत्कार' में नसीरुद्दीन शाह बदला लेने के लिए शाहरुख़ खान की मदद करता है। 'भूत अंकल' में जैकी श्रॉफ और 'वाह लाइफ हो तो ऐसी' में शाहिद कपूर को यमराज बने संजय दत्त की मदद से भला करते दिखाया गया। 'टार्ज़न द वंडर कार' में भी कुछ ऐसी ही कहानी थी। इंग्लिश फिल्म 'घोस्ट' से प्रेरित होकर 'प्यार का साया' और 'माँ' बनाई गई थी। दोनों फ़िल्में ऐसे भूतों की थी, जो बुरे नहीं थे।

विक्रम भट्ट जैसे बड़े फिल्मकार भी ऐसी फिल्म बनाने के मोह से बच नहीं सके! उन्होंने 'राज़' की सफलता के बाद तो इसके कई सीक्वल बना डाले। भट्ट ने 1920, 1920-ईविल रिटर्न, शापित और हॉन्टेड में आत्माओं के दीदार करवाए! 2003 में अनुराग बासु जैसे निर्देशक ने भी 'साया' जैसी फिल्म बनाई। रामगोपाल वर्मा जैसे प्रयोगधर्मी निर्देशक ने तो 'भूत' टाइटल से ही फिल्म बना दी। इसके बाद फूँक, फूँक-2, डरना मना है, डरना ज़रूरी है, वास्तुशास्त्र, भूत रिटर्न में भी हाथ आजमाए! अनुष्का शर्मा जैसी नए जमाने की एक्ट्रेस ने 'फिल्लौरी' में न सिर्फ काम किया। बल्कि, फिल्म की निर्माता भी वे खुद थी। अनुष्का ने खुद ही भूत का किरदार निभाया! फिल्म की कहानी एक मांगलिक लड़के की थी, जिसकी शादी होने वाली रहती है। उसकी होने वाली पत्नी को मंगल दोष से बचाने के लिए पहले उसकी शादी उस पेड़ से कर दी जाती है, जिस पर अनुष्का भूत बनकर रहती है। पेड़ पर रहने वाली भूतनी लड़के के पीछे लग जाती है और हास्यास्पद रोमांटिक हालात पैदा हो जाते हैं। भूतनी बनी अनुष्का 'फिल्लौरी' में दर्शकों को लुभाती भी है

और डराती भी! क्योंकि, अनुष्का का भूत किसी को नुकसान नहीं पहुंचाता।

1991 में आई माधुरी दीक्षित और जैकी श्रॉफ की फिल्म '100 डेज़'.आई थी। फिल्म का सस्पेंस लोगों को पसंद आया। पूरी फिल्म में सस्पेंस बने होने से फिल्म ने क्लाइमैक्स तक दर्शकों को बांधकर रखा। यही वजह थी कि फिल्म हिट रही थी। 2008 में आई फ़िल्म 'फूंक' डरावनी थी। इस फिल्म के बारे में निर्देशक रामगोपाल वर्मा ने कहा था कि अगर कोई बिना डरे अकेले इस फ़िल्म को थियेटर में देख लेगा, तो वे उसे 5 लाख का इनाम देंगे। रामगोपाल वर्मा ने फिल्म इंडस्ट्री को कई चर्चित हॉरर फिल्म दी। इनमें एक फिल्म 'रात' भी है। इस फिल्म में मुख्य किरदार रेवती थी। 1992 में आई इस फिल्म में डर ही डर अंत तक था। इसकी गिनती रामगोपाल वर्मा की बेस्ट फिल्मों में होती है। 'डरना मना है' भी रामगोपाल वर्मा की ही फिल्म थी। इसमें 6 कहानियों को एक फिल्म में पिरोया गया था। सभी कहानियों ने दर्शकों को डराया।

सुष्मिता सेन और जेडी चक्रवर्ती अभिनीत फिल्म वास्तु शास्त्र (2004) आई। रामगोपाल वर्मा की इस फिल्म में एक पेड़ पर रहने वाली बुरी आत्माएं जो पास के घर के लोगों को परेशान करती हैं। किरदार उनसे कैसे सामना करते हैं, ये दिखाया गया। विक्रम भट्ट और अरुण रंगाचारी ने 2011 में एक फिल्म 'हॉन्टेड 3डी' बनाई। ये बहुत ही भयानक और डरावनी फिल्म थी। इसमें 3डी टेक्निक का भी उपयोग किया था। यही वजह थी कि दर्शकों ने इसे बहुत पसंद किया। भूत-प्रेत का भयानक रूप और वे इंसान को कैसे टॉर्चर करते है जिसमें वे प्रवेश करते हैं। फिल्म '1920' में यह बखूबी दिखाया। 2008 में आई विक्रम भट्ट की ये फिल्म बहुत डरावनी थी, जिसे दर्शकों ने पसंद किया। इसकी सीक्वल '1920 रिटर्न' भी आई थी।

देखा गया है कि ऐसी ज्यादातर फिल्मों के कथानक में किसी पौराणिक कहानी का जिक्र करके भूत या प्रेत को जोड़ा जाता है। राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर की फिल्म 'स्त्री' और उसके बाद आई 'स्त्री-2' भी पौराणिक कथाओं पर आधारित है। एक गांव में चुडैल रातों में घूमती हैं और किसी भी मर्द को अकेला पाकर उठा ले जाती है। लोग अपने घर के बाहर 'नाले बा' लिख देते थे, जिसका मतलब होता है 'कल आना।' इस फिल्म का सीक्वल स्त्री-2 नाम से बना और 2024 में आई इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर कमाई का रिकॉर्ड ही बना दिया। इसी तरह अनुष्का शर्मा की फिल्म 'परी' भी काफी डरावनी फिल्म है। इसमें उन्होंने खुद एक 'इरफ़ित' का किरदार निभाया, जिसका नाम रुख़साना होता है। ये फिल्म भी पौराणिक कथाओं के आधार पर बनाई थी। इरफित एक काफी ताकतवर शैतान होता है, जो खंडहरों और मंदिरों के आसपास घूमता दिखाई देता है, वो इंसानों के आसपास रहते हैं और उनसे शादी भी कर लेते हैं, लेकिन इनकी फितरत घातक और निर्दयी किस्म की होती है।

बिपाशा बसु और डीनो मोरिया की फिल्म 'राज' भी अपने दौर की डरावनी फिल्मों में से एक है। आज के समय भी इसकी गिनती बेस्ट हॉरर फिल्मों में की जाती है। फ़िल्म में एक लड़की की भूतिया कहानी है, जो मरने के बाद प्रेत-आत्मा बन जाती है। 'प्रेत-आत्मा' का मतलब एक मृत आदमी की आत्मा होती है, जो तब एक भूत या शैतान का रूप लेती है। जब उसकी कोई इच्छा अधूरी रह जाती है या उसको किसी से बदला लेना होता है। ये प्रेत आत्मा इसलिए बनती है, क्योंकि उनकी डेड बॉडी का अंतिम संस्कार नहीं किया गया हो। अनुष्का शर्मा के प्रोडक्शन हाउस में बनी ये फ़िल्म 'बुलबुल' को दर्शकों ने खूब पसंद किया। ये बंगाल के एक गांव की कहानी है, जो 19वीं सदी में बंगाल प्रेज़िडेंसी के बैकग्राउंड पर बनी है। ये फिल्म चुड़ैलों पर एक नई कहानी कहती है। इस फिल्म को भी पौराणिक कथाओं के आधार पर बनाया गया। चुड़ैल एक एक पौराणिक अलौकिक औरत होती है। इसे जीवित वस्तु का भूत भी कहा जाता है। फ़िल्म में तृप्ति डिमरी, अविनाश तिवारी और राहुल बोस हैं। इमरान हाशमी की फिल्म 'एक थी डायन' ने भी दर्शकों को खूब डराया। इस फिल्म की कहानी एक जादूगर पर आधारित है, जो एक डायन से प्रेत बाधित होता है। इस फिल्म की कहानी भी पौराणिक कथाओं के आधार पर थी। डायन को चुड़ैल के तौर पर भी जाना जाता है, जिसको संस्कृत में 'दाकिनी' कहा जाता है। मध्यकालीन हिंदू ग्रंथों जैसे 'भगवत गीता' में भी दाकिनी का उल्लेख मिलता है, जो एक दुष्ट महिला होती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

भारत और पाकिस्तान में तनाव और फ़िल्में

अशोक जोशी

पहलगांव में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध किसी थ्रिलर फिल्म से कम नहीं हैं। जो भावनाएं इन दिनों हालात से निर्मित हुई है, सिनेमा हाल के अंदर इस तरह के

हालात हमारी फिल्मों ने कई बार निर्मित किए गए। भारत-पाक को लेकर बनी फिल्मों को भी सफलता की गारंटी माना जाता है। मई 2018 में रिलीज हुई फिल्म 'राजी' हो 'उरी' या फिर 'गदर 2' इन सभी फिल्मों ने सिनेमाघरों में दर्शकों को अंत तक बांधे रखा और अच्छी कमाई की।

पिछले देश विभाजन की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्मों सूची लंबी है। इनमें प्रमुख फिल्में सनी देओल अभिनीत गदर तथा गदर 2, मनोज बाजपेयी और उर्मिला मातोंडकर की पिंजर, ट्रेन टू पाकिस्तान, ऋषि कपूर और रेखा अभिनीत सदियां, उरी, राजी और 'सरबजीत' सहित दर्जनों ऐसी फिल्में हैं जिनकी शूटिंग अमृतसर, तरनतारन, गुरदासपुर और पठानकोट जिलों में हुई। ये सभी फिल्में देश विभाजन के बाद उपजी त्रासदी और सामरिक संबंधों पर आधारित थी। इनमें फिल्मकारों ने दर्शकों को यह बताने या दिखाने की कोशिश की है, कि भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद दोनों देशों के रिश्तों में कितनी तल्खी है।

'गदर' और ट्रेन टू पाकिस्तान, दोनों फिल्मों दिखाया गया है कि किस तरह रेलगाड़ियों पर लोगों की लाशें पाकिस्तान से भारत आ रही हैं। कल तक एक दूसरे का दुख दर्द साझा करने वाले हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे खून के प्यासे हो जाते हैं। वहीं 'पिंजर' में लोगों ने देखा कि देश विभाजन के दौरान एक लडकी का धर्म जबरन बदला जाता है। कुछ ऐसा ही 'रिफ्यूजी' में भी दिखाने की कोशिश की गई। अभिषेक बच्चन द्वारा अभिनीत इस फिल्म की भी ज्यादातर शूटिंग पंजाब में ही हुई। अब हाल ही में सलमान खान द्वारा अभिनीत फिल्म 'भारत' की शूटिंग लुधियाना और अमृतसर में हुई है। इस फिल्म में भी भारत विभाजन के दृश्यों को फिल्माया गया है।

भारत और पाकिस्तान के संबंधों पर दो किस्म की फिल्में प्रमुखता से बनती है। कुछ फिल्में भारत और पाकिस्तान के बीच लड़े गए युद्धों और आतंकवाद पर फिल्में बनती हैं। दूसरी किस्म की फिल्में भारत विभाजन और इसके बाद के उपजे हालात को लेकर फिल्में बनती हैं। कुछ फिल्मकारों ने दोनों देशों के बीच स्थापित कटुता और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के बीच दर्शकों को प्रेम परोसती फिल्में दिखाने का प्रयास किया है।

इन फिल्मों में प्रमुख है वीर जारा, बजरंगी भाईजान और सदियां। इन सभी फिल्मों में देश विभाजन के बाद भारत-पाकिस्तान में रह रहे लोगों की कसक को दिखाया गया। इन फिल्मों में यह भी दिखाने का प्रयास किया गया है कि दोनों देशों की संस्कृति एक है। वहां के आवाम के दिलों में भी भारत के प्रति प्रेम पनपता है। लेकिन, दोनों देशों के बीच खिंची सरहद की लकीर और राजनीति लोगों को मिलने नहीं दे रही।

इससे पहले भी भारत में पाकिस्तानी फिल्मों का प्रदर्शन होता रहा है। 2008 में पाकिस्तानी निर्देशक शोएब मंसूर की फिल्म 'खुदा' आई थी। यह पिछले 43 सालों में शायद पहली फिल्म थी, जो सरहद के बाहर भारत में प्रदर्शित की गई थी। इसके बाद मेहरीन जब्बार की फिल्म 'राम चंदर' आई थी। यही नहीं सन 2011 में मंसूर की फिल्म 'बोल' को भी भारत में रिलीज किया गया जिसे भारी सफलता मिली थी। भारत में प्रदर्शित इन सभी फिल्मों में भारत-पाक सरहद पर बसे गांवों के लोगों की परेशानियों को दिखाया गया, जिसमें वे गलती से सीमा पार कर भारत में दाखिल हो जाते है।

इन फिल्मों में यह भी दिखाने का प्रयास किया गया है कि दोनों देशों के लोगों की संस्कृति (भारत और पाकिस्तान के पंजाब) और बोलचाल एक जैसी है। बीएसएफ से लेकर जेलों में बंद पाकिस्तानी कैदियों, जो रास्ता भटक कर भारत आ जाते हैं, के साथ मधुर व्यवहार को दिखाया गया है। इन सभी फिल्मों ने भारत में अच्छी कमाई की है।

इसके साथ फिल्म 'बजरंगी भाईजान' और 'वीर जारा' ने भी पाक में अच्छी कमाई की थी।

अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों, लक्ष्य, जेपी दत्ता द्वारा निर्देशित 'बॉर्डर' और एलओसी कारगिल, फैटम, हिंदुस्तान की कसम (नई और पुरानी) और 'द हीरो।' इसके अलावा भारतीय जासूसों जिन्होंने देश की सुरक्षा के लिए लंबे समय तक पाकिस्तान में जासूसी की है के जीवन आधारित कुछ चुनिंदा फिल्मों की बात करें तो सलमान खान अभिनीत एक था टाइगर, टाइगर अभी जिंदा और आलिया भट्ट अभिनीत 'राजी' थी।

यदि फिल्मों की कमाई की बात करें तो गदर ने तब 77 करोड़, कश्मीर में पकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर बनी फिल्म द हीरो ने 26 करोड़ और हरेंद्र सिक्थ के उपन्यास कालिंग सहमत पर बनी फिल्म 'राजी' में दिखाया गया है कि 1971 के भारत-पाक जंग में एक युवा लड़की जो भारत की अंडर कवर एजेंट थी और देश के लिए किस तरह से पाकिस्तान में जासूसी करती है। इस फिल्म दोनों देशों के संबंधों पर फिल्मों की सफलता सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए 122 करोड की कमाई की थी जो बॉक्स ऑफिस पर सफल मानी गई सनी देओल की 'गदर 2' तो पहले भाग से भी ज्यादा कमाऊ साबित हुई।

भारतीय सेना के पराक्रम पर बनी 'गाजी' ने खासी कमाई की, जबकि 'उरी' ने तो भारतीय लोगों में एक नया जज्बा भर दिया। वह सर्जिकल स्ट्राइक से इतने प्रभावित हुए हैं मानों उन्हीं ने जाकर यह काम अंजाम किया हो। कुछ लोग यह मानते हैं कि इस फिल्म से खीज कर ही पुलवामा पर हमला कर पाकिस्तान ने अपनी खीज मिटाने का काम किया। कुछ लोग यह भी कयास लगा रहे हैं कि जिस तरह से हाल ही में प्रदर्शित 'छावा' से औरंगजेब की जो क्रूर छबि निर्मित हुई और आततायी को प्रति देश में फैली नफरत से एक वर्ग में निर्मित एकता से चिढ़कर ही पहलगाम घटना को अंजाम दिया।

इसके बाद देशभर में फैली राष्ट्रीय एकता के जज्बे ने एक बार फिर बॉलीवुड को झकझोरा है और सलमान ने अपना विदेशो में किए जाने वाला शो कैंसल ही नहीं किया है बल्कि देशभक्ति की भावना को भुनवाने की खातिर गलवान घटना पर आधारित एक फिल्म करने का निर्णय भी लिया है जिसमें वह आर्मी ऑफिसर बने दिखाई देंगे। आज पहलगाम घटना से सभी व्यथित हैं लेकिन यह तो तय है कि जब मौसम बदलेगा और हिंदुस्तान इसका बदला लेगा उसके बाद इस विषय पर भी निश्चित ही कोई फिल्म पर्दे पर दिखाई देगी।

‘सैल्यूट कीजिए, आली जनाब आए हैं...!’

प्रकाश पुरोहित

करीब साठ साल पहले की बात है, तब मध्यप्रदेश में शायद पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकार बनी थी और मुख्यमंत्री थे गोविंद नारायण सिंह। कुछ पहली बार विधायक बने थे, तो कुछ मंत्री भी। ये जोड़-तोड़ से बनी सरकार थी, जो विजयाराजे सिंधिया की मर्जी से बनाई थी। तभी का यह किस्सा है...

नए-नए मंत्री के साथ नए-नए विधायक भी उज्जैन के नागझिरी पुलिस लाइन से लगे सर्किट हाउस यानी विश्राम भवन आए। जैसे ही मंत्रीजी कार से उतरे, वहां गार्ड ने सलामी दी। मंत्रीजी को तो शायद आदत रही होगी, लेकिन विधायक महोदय को यह जलवा बहुत पसंद आया। उन्हें अच्छा लगा कि सिपाही बंदूक लिए खड़े हैं, बिगुल बज रहा है और मंत्रीजी भी सैल्यूट का जवाब सैल्यूट से दे रहे हैं। मंत्री तो भोपाल लौट गए, मगर विधायक के मन में ये ‘गार्ड ऑफ ऑनर’ छप गया।

कुछ ही दिनों बाद विधायक फिर विश्राम भवन पहुंचे, लेकिन क्या देखते हैं कि ना तो गार्ड है और ना ही ऑनर। विधायक को यह अपमान लगा कि मुझे यह सम्मान क्यों नहीं दिया जा रहा है! उन्होंने वहां अधिकारी से शिकायत की कि मुंह देख कर तिलक किया जा रहा है। मंत्री को तो सलामी दी गई और मुझे किसी ने पूछा भी नहीं। यह लोकतंत्र के चुने हुए प्रतिनिधि का अपमान है!

अधिकारी ने समझाना चाहा कि यही नियम है कि सिर्फ मंत्री को ही ‘गार्ड-ऑफ ऑनर’ दिया जाता है, विधायकों को नहीं। विधायक का जवाब था, मंत्री क्या आसमान से पैदा होता है? विधायक ही तो मंत्री बनता है, यानी मंत्री होने के लिए विधायक होना पहले जरूरी है, यानी विधायक से ही मंत्री बनता है। कैरी नहीं होगी तो आम कहां से आएगा! क्या देखा नहीं, अभी सुबह तक जो विधायक थे, शाम होते-होते मंत्री बन गए। यह नाइंसाफी है और हमारे विधायक होने का अपमान भी!

विधायक तो अंदर जाने को भी तैयार नहीं थे और वहीं बगीचे में जमीन पर बैठ गए धरना देने। ‘जब तक वाजिब सम्मान नहीं मिलेगा, मैं उठने वाला नहीं हूं।’ तमाम अधिकारी जमा हो गए और उन्हें समझाने लगे, मगर विधायक की तो एक ही रट थी कि जब तक सलामी नहीं, धरने पर बैठा रहूंगा। कल से अनशन भी शुरू कर दूंगा। यह आत्मसम्मान का सवाल है।

यह खबर भोपाल पहुंची तो हंगामा हो गया कि सरकारी दल का ही विधायक, अपनी ही सरकार के खिलाफ धरने पर बैठ गया है। जो नजदीकी नेता थे, उन्होंने भी समझाने के लिए फोन लगाए, लेकिन विधायक ने किसी से बात नहीं की। बेचारे अफसर फोन लिए अंदर-बाहर होते रहे। यह वाकया सुबह का था और दोपहर होने आई थी। विधायक ने नाश्ता या खाना तो छोड़िए, पानी तक नहीं पिया था। ‘मुंह में पानी तब डालूंगा, जब सम्मान मिलेगा।’

तब मुख्यमंत्री गोविंद नारायण सिंह थे, जो अपनी तेज तर्रार समझ की वजह से अलग पहचान रखते थे। उनके कई किस्से हवा में थे, उनमें यह भी रहा कि कम्युनिस्ट पार्टी ने भोपाल में महिलाओं, बच्चों और मजदूरों का जंगी जुलूस निकाला था, जो मुख्यमंत्री निवास जाकर घेराव करने वाला था। जब यह खबर सिंह को मालूम हुई तो उन्होंने अधिकारियों कहा- ‘इतनी गरमी है, महिलाएं-बच्चे भूखे-प्यासे होंगे, उनके लिए रास्ते में ‘ठंडे’ का इंतजाम कीजिए, कोई प्यासा ना रहे।’ बस, जैसे ही जुलूस में ‘ठंडा’ पहुंचा, काहे का घेराव और काहे का जुलूस। सारी भीड़ तितर-बितर हो गई... तो ऐसे थे गोविंद नारायण सिंह!

जब विधायक के धरने की खबर लगी तो गोविंद नारायण सिंह ने इलाज भी सुझा दिया। दरअसल, हर सरकारी भवन में सुबह-शाम सूरज-सलामी होती है, यानी सुबह जब सूरज निकलता है, तब तिरंगा लहराया जाता है और शाम को उसी तरह सम्मान से बिगुल बजाते हुए उतारा जाता है। उज्जैन के अधिकारी से कहा गया, विधायक को बैठे रहने दो। जब शाम हो तो बोल देना- सर, आपकी मांग मंजूर हो गई है। आ जाइए, आपको सलामी दे दी जाए।

ऐसा ही किया गया। विधायक को यही समझ आता रहा कि उन्हें ‘गार्ड ऑफ ऑनर’ दिया जा रहा है, जबकि उस समय सूरज-सलामी दी जा रही थी। वैसे विधायक का घर तो उज्जैन में ही था, लेकिन सिर्फ सलामी के लिए विश्राम-गृह पहुंच गए थे। जैसे ही सलामी मिली, घर चले गए। यह किस्सा कई दिनों तक अलग-अलग नाम और तरीके से हवा में तैरता रहा, क्योंकि उस समय सोशल मीडिया जैसा कुछ नहीं था, जो वायरल हो जाता!

ये बात आज इसलिए याद आ रही है कि अभी भोपाल से आदेश निकला है कि सांसद और विधायक को भी पुलिस अधिकारी सैल्यूट करेंगे। ठीक ही हुआ, जो पहले से ऐसा आदेश निकल गया, वरना कोई नया नकोर विधायक या सांसद अगर अड़ जाता सैल्यूट के लिए तो सरकार की कितनी भद पिटती कि अब तो वीडियो वायरल होने में समय ही कितना लगता है! वैसे यह नियम तो सांसद-विधायकों को भी बताया जाना चाहिए कि सैल्यूट का जवाब सैल्यूट से ही दिया जाता है... गर्दन हिला कर या हाथ उठाकर नहीं। जब भी पुलिस अधिकारी सैल्यूट करेगा, इन्हें भी हाथ तो माथे तक ले जाना ही पड़ेगा!

आसान नहीं है हिमांशी के दर्द को समझना

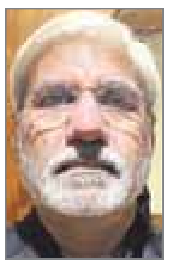

अनंत पीड़ा

राहुल देव

(विख्यात पत्रकार और विचारक)

हिमांशी नरवाल की मन:स्थिति की कल्पना करना आसान नहीं है। अपने सुहाग और भावी जीवन के मिल कर देखे, सोचे सारे सपनों के मिट जाने की विभीषिका से गुज़रती इस युवा स्त्री की पीड़ा की कल्पना भी आसान नहीं है। उसने शादी के एक सप्ताह में ही पति को तडफ़कर मरते हुए देखा है। ऐसे हालात में हिमांशी ने सामान्य अपेक्षाओं को ध्वस्त करके जो कहा उसने पूरे देश को चौंका दिया। हिमांशी की पीड़ा अकेली नहीं है। 27 अन्य पत्नियां, माएं और परिवार इसी पीड़ा में हैं। सबका दुख साझा है। पूरा देश उनके आगे, उनके दिवंगत परिजनों को शहीद मान कर नतमस्तक और नम है।

हिमांशी का गहरी, मर्मांतक पीड़ा को भीतर पीकर सद्य वैधव्य से गुज़रती स्त्री का गरिमा-दीप्त चेहरा, उसकी सीधी-सरल भाषा में कह दी गई असाधारण बात और उसकी निजी विभीषिका के संदर्भ की चेतना मन में घुमड़ रही है। अभिव्यक्ति के वे सही सटीक शब्द खोज रही है जो उसे व्यक्त कर सकें जो उसे देख और सुन कर उमड़ रहा है। कोशिश करता हूँ। हिमांशी नरवाल आज भारत में नैतिक और बौद्धिक ऊँचाई के उस असाधारण शिखर पर खड़ी दिखती है, जो भारतीयता के श्रेष्ठतम, उदात्ततम, महानतम मूल्यों को स्वयं जीकर ही पाया जा सकता है।

मैं नहीं जानता हिमांशी की पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक पृष्ठभूमि क्या है। यही मालूम है कि वह पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा मारे गए सेना अधिकारी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की वह पत्नी है जिसे वैवाहिक जीवन के सिर्फ़ पाँच-छह दिन मिले। उसकी मन:स्थिति की कल्पना भी हमारे लिए कठिन है। अपना सुहाग और भावी जीवन के मिल कर देखे, सोचे गए सारे सपनों के मिट जाने की विभीषिका से गुज़रती युवा स्त्री से हम केवल चीत्कारों, रुदन, पीड़ा की स्वाभाविक भावनात्मक अभिव्यक्तियों की ही अपेक्षा करते हैं। उससे हम देश की वर्तमान परिस्थितियों, व्यापक सामाजिक-धार्मिक संदर्भों की गहरी समझ रखने, एक असाधारण अंतर्दृष्टि और प्रज्ञा से विचार करने, संवाद करने की अपेक्षा नहीं करते।

हिमांशी ने ऐसी सामान्य अपेक्षाओं को ध्वस्त करके ऐसी बात कह दी है, जिसने पूरे देश को चौंका दिया। प्रत्येक सज्जन और समझदार व्यक्ति ने स्वाभाविक ही उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मेरे लिए वह आज हमारी नैतिक नायिका है। मैं चाहती हूँ पूरा देश उनके लिए प्रार्थना करे, वो जहाँ भी हैं खुश हैं। मैं किसी के प्रति कोई नफरत नहीं चाहती। लोग कश्मीरियों और मुसलमानों के खिलाफ जा रहे हैं। हम यह नहीं चाहते। हम शांति चाहते हैं। सिर्फ़ शांति। हाँ, हम न्याय तो चाहते ही हैं। जिन लोगों ने उनके साथ ग़लत किया है उन्हें सजा मिलनी चाहिए।

जब सारे देश में पाकिस्तान पर स्वाभाविक क्रोध के ज्वार को भारत में रहने वाले मुसलमानों के खिलाफ मोड़ देने का दक्षिणपंथी अभियान ज़ोरों पर है, कश्मीरियों को पीटा जा रहा है, कोसा जा रहा है, सारे तथाकथित बड़े चैनल युद्धोन्माद भड़काने में अपनी रचनात्मकता दिखा रहे हैं उस समय में अपनी आँखों के सामने आतंकवादियों का अपने एक सप्ताह पुराने पति को गोली मार देना देख चुकी हिमांशी के ये शब्द क्रांतिकारी हैं।

हिमांशी की पीड़ा अकेली नहीं है। 27 अन्य पत्नियाँ, माएँ और परिवार इसी पीड़ा में जी रहे हैं। सबका दुख साझा है। पूरा देश उनके आगे, उनके दिवंगत परिजनों को शहीद मान कर नतमस्तक और नम है। हम उन सभी महिलाओं, परिजनों का अभिनन्दन करते हैं। क्योंकि, लगभग सबने ही लौट कर अपने-अपने ढंग से यह कहा कि उन विकट क्षणों में सबसे पहले और सबसे ज़्यादा सहायता उन्हें कश्मीरियों ने दी जो उस समय पहलगाम की बैसरन घाटी में मौजूद थे। जिन कश्मीरियों को दशकों से भारत-विरोधी, हिंदू-विरोधी बताया-प्रचारित किया जा रहा था, उन्हीं आम कश्मीरियों ने इन हिंदू पर्यटकों की मदद की जिन्हें इस्लामी आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर मारा था। इन सब परिजनों के आगे भी हम नतमस्तक है।

लेकिन, हिमांशी ने जो कहा, जिस तरह से कहा वह उसे अलग खड़ा करता है। वह मददगार कश्मीरियों की भूमिका की बात करके, उन्हें धन्यवाद देकर अपना दुख व्यक्त कर सकती थी। उसने एक नितांत अनपेक्षित बात कही जो अपने अर्थ और निहितार्थों में उसे असामान्य ऊँचाई और विशिष्टता देती है। इसलिए उसका असामान्य अभिनन्दन और सम्मान हो रहा है। इसलिए कि उसकी बात के पीछे एक असामान्य अंतर्दृष्टि और नैतिक साहस संपन्न ऐसी चेतना और बुद्धि है, जो उसे सक्षम बनाती है कि अपने निजी दुख को झेलते हुए भी वह देश के व्यापक वातावरण, घटनाओं और उनके कारणों को देख सके। देख ही न सके, बल्कि उनमें नीर-क्षीर विवेक के साथ आतंकवादियों के अधर्म और कश्मीरी मुसलमानों सहित भारतीय मुसलमानों में अंतर कर सके। दोनों को एक ही मानने और भारतीय मुसलमानों को इस हमले के प्रत्यक्ष या परोक्ष उत्तरदायी मानने के विरुद्ध हमें आगाह कर सके।

इस असाधारण धैर्य, समझदारी और गरिमा का राष्ट्रीय अभिनन्दन होने की जगह उसके विरुद्ध न कहे जा सकने वाले शब्दों में निंदा अभियान चलाया जाना अमानव हो चुके मनुष्य रूपी विषाणुओं का ही काम हो सकता है। ऐसी हरकतें पशु भी नहीं करते। मनुष्यता के दो मॉडेल हमारे सामने हैं। एक ओर हिमांशी है। अपनी गरिमा और पीड़ा-दीप्त प्रज्ञा के साथ। दूसरी ओर यह रक्त-पिपासु उद्दंड भीड़ है। चुनाव हमें करना है।

उम्मीद सब दु:खों का कारण और शिकायतों से भरपूर मन

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

चूंकि पैर टूटने के कारण बिस्तर पे थी तो सभी प्रकार के विचार आते जाते थे। शुरूआती दौर पे मेरी नज़र रही कौन आया कौन गया। देखो मैंने उसके लिये इतना किया वो पूछने भी नहीं आया। अपने किये दूसरों के अनकिये का हिसाब रखने लगी दुःखी रहने लगी, दर्द बढ़ने लगा। मन शिकायतों से भरने लगा, अचानक टी.वी. खोला तो ब्रह्मकुमारी संस्थान की बीके शिवानी की दो लाइनें सुनी। वक्त ही वक्त था मेरे पास। सबसे पहले मैंने उन लोगों की लिस्ट बनाई जो आये देख के खुश हुई कि लोग मुझे कितना प्यार करते है। उनका मन ही मन आभार व्यक्त किया, फिर सोचा पहले मैं खाली वक्त को तरसती थी अब मैं खूब पढ़ सकती हूँ लिख सकती हूँ। मैनिफेस्ट लिखने लगी।

दूसरों से उम्मीद हमें दुःखी बनाती है जब वो हमारी उम्मीदों पे खरा नहीं उतरते और हम दुःखी रहने लग जाते है माता-पिता बच्चों से, बच्चे माता पिता से, दोस्त दोस्त से, समाज से। एक बहुत सुंदर तस्वीर देखी टी.वी. पर सुप्त ज्वालामुखी में से धीमे धीमे उठता धुँआ। बस हमने अपने मन की हालत कुछ ऐसी ही कर ली है ऊपर से शांत दिखते हम भीतर ही भीतर सुलगते रहते है और एक दिन ब्लड प्रेशर का धुंआ आग में परिवर्तित हो फूट पड़ता है और हम बीमारी, अवसाद में डूब जाते है। मैं जानती हूँ अपनों से उम्मीद रखना मानव स्वाभाव है हमारे घर के डॉग से भी हम उम्मीद रखते है वो आपका कहना माने और डॉग चाहता है आप उसे तवज्जो दे। वैसे ये लाइन भी बहुत सुनते है ‘‘उम्मीद पर दुनिया कायम है पर ये उम्मीद अंधेरे में रौशनी की उम्मीद वाली उम्मीद है एक्सपेक्टेशन वाली नहीं। जहाँ आपने अपनी खुशी के लिये कुछ उम्मीद पाली हो दुःख का आगमन हुआ। जीना है मस्त तो खुशी की उम्मीद रखो इंसानों की नहीं।

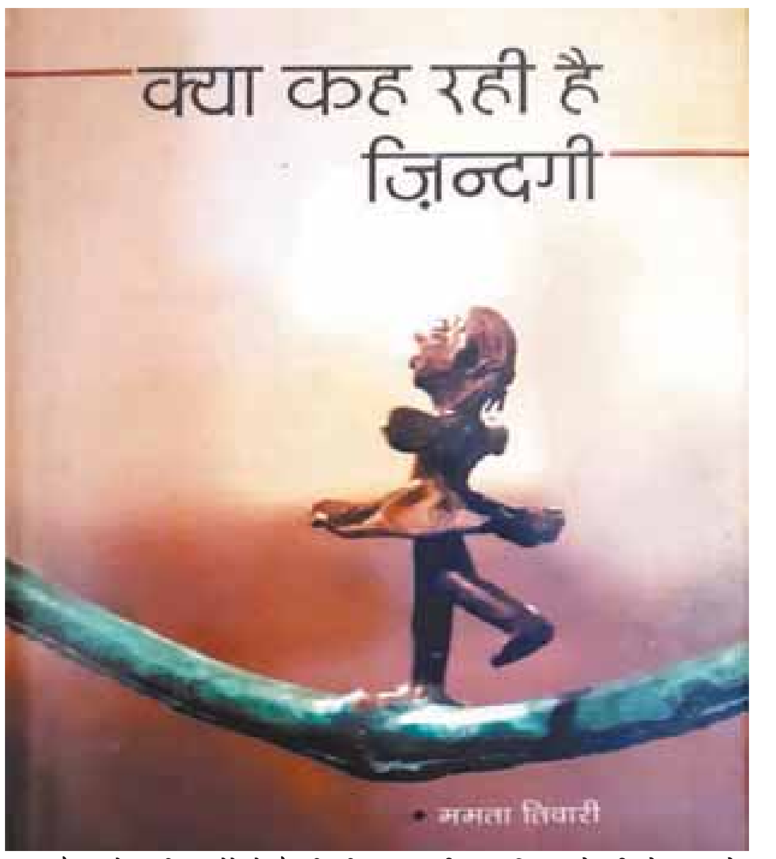

रही बात शिकायतों की तो ध्यान देना आपने अगर अपना मन शिकायती बना लिया है आपको कोई चीज़ नहीं जंचती, इंसान या रहन सहन, लोगो को आपके घर आना, हर इंसान में मीन मेख निकालना ये आपकी ज़िंदगी में शामिल है तो आप खुद महसूस करेंगे आप बेहद भारी सा महसूस करेंगे भीतर से। सुबह से घर के डॉग की पीठ थपथपाने से, जो भी आपके घरेलू मददगार, मिलने आने वाले लोग सबके कार्यो की प्रशंसा करेंगे वे सब दुगने उत्साह से आपके काम में मदद करेंगे खुश रहेंगे। आपका मन भी रूई सा हल्का हो जायेगा। तो शिकायती बनना छोड़ दीजिये ये आपकी सेहत के लिये अच्छा नहीं है। अपनी जिंदगी को खूबसूरत बनाने के लिये ये रवैया अच्छा है अर्थात् आभारी होकर पूछूं सुबह सवेरे सबसे पूछें रोज़ और क्या कह रही है जिंदगी?

उदासियों की मियाद बहुत लंबी है
तो चलो उसीके साथ जिंदगी का जश्न मनायें।
बदल नहीं पा रहे जब हम जमाने को
तो क्यों ना खुद में ही बदलाव लायें।
गर खुशी ने कभी दस्तक ही नहीं दी दर पर
तो गमों को ही दोस्त बनायें।
फूलों के खिलने में शायद वक्त है अभी,
तब तक कांटो से ही निभायें
और जो ना हो हासिल कांटे भी तो
दरख्तों से काम चलायें
नफ़रतों की गलियों को रौंदते फिरे अब तक
मुहब्बत के तंबू में अब डेरा जमायें
रोने के लिये हमारों वजहें हासिल हैं
चलो अब हंसने के बहानों का हिसाब लगायें
उम्र की तरफ मत देखो आग़ाज़ के लिये
चलो आज से ही बच्चा बन जायें
कुल मिलाकर फ़लसफ़ा यही कहता है जिंदगी का
कि हर हाल में सब मुस्कुरायें।

वैसे देखना, जैसे पोप को पोप देखता है!

❒ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

इस समय यही सवाल पूछा जा रहा है- तुमने लुई थेरू की नई डॉक्यूमेंट्री फिल्म ‘सेटलर्स’ देखी? वजह है बीबीसी के टीवी पत्रकार लुई पहुंच गए हैं इजराइल और फलस्तीन के उस इलाके में, जहां यहूदी आ रहे हैं और इन्हें सेटलर्स कहा जाता है। यह ऐसा इलाका है, जहां धीरे-धीरे फलस्तीन की जमीन पर इजराइल का झंडा लहरा रहा है।

लुई 2011 में इस इलाके में आए थे और अक्टूबर 2023 में हमास के हमले के बाद फिर लौटे हैं। लुई उन परिवारों से बात करते हैं, जो टेंट में हैं, लेकिन सभी के सिर पर जमीन सवार है, जो उनके हिसाब से उनका हक है। गजा और फलस्तीन के नाम पर इनकी त्योरियां चढ़ जाती हैं। डैनिएला वाइज से भी लुई मिलते हैं, जो सेटलर्स मूवमेंट की कर्ताधर्ता हैं। शिविर लगाती हैं, लोगों को यहूदी देश के सपने दिखा कर सूखे पहाड़ी इलाके में बसने के लिए न्यौता देती हैं। डॉक्यूमेंट्री दिखाती है कि किस तरह इजराइल की सरकार यहूदी और फलस्तीन की खाई को बढ़ा रही है। डैनिएला कहती हैं कि उनके पास आठ सौ परिवार हैं, जो इस इलाके में बसना चाहते हैं। यहूदी रब्बी इस प्लान के साथ में हैं और तुरंत ही सभी उस पाक-पवित्र जमीन के लिए गाना शुरू करते हैं।

लगभग घंटे भर की इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म में कई बार ऐसा हुआ कि लुई और उनकी टीम को इजरायली आर्मी और पुलिस से कहना पड़ा कि बंदूकें दूर रखें। लुई को सख्त शब्दों में कहना पड़ा कि ‘मुझे हाथ न लगाना’, क्योंकि अगला इंसान धक्का देने के लिए उतारू था।

जो लुई को जानते हैं और उनकी फिल्में देख चुके हैं, उन्हें पता है कि इससे पहले की फिल्मों में अगर कोई गलत कहने, सुनने, सोचने वाला इंसान मिल जाता है तो आईना दिखाना नहीं छोड़ते। यहां अलग ही अंदाज है। उनके सामने लोग फलस्तीनियों को क्या नहीं कह गए, लेकिन लुई ने सिर्फ खामोशी से गलत बातों को हवा में उड़ा दिया, ताकि ध्यान जाए और यह बात आगे बढ़े। खास तौर पर डैनिएला के साथ, जब यह मानने से भी इंकार कर देती है कि इजराइल कोई ज्यादती नहीं कर रहा है। यह भी नहीं मानती कि इजरायली सेटलर्स फलस्तीनियों पर हमला कर देते हैं। डैनिएला मुस्करा कर झूट पर झूट बोलती चली जाती हैं। यह उम्र का बदलाव है या उस इलाके में खतरे की वजह से बदलाव करना पड़ा है, यह तो लुई ही बेहतर जानते हैं।

फिल्म में टीम के लोकल गाइड फलस्तीन के इसा अम्रो हैं, जिन्हें पुलिस और आर्मी कई इलाकों से गुजरने भी नहीं देती। उन बंद दुकानों की सन्नाटों वाली गलियों में जब लौटते देखते हैं तो लगता है फिल्म बनाने वाले, देखने वाले, आर्मी, पुलिस सब अपने-अपने रास्तों को लौट जाएंगे, लेकिन जो इनकी जिंदगी की सच्चाई है, कब बदलेगी, कब बिना डर के सड़क पर घूम पाएंगे!